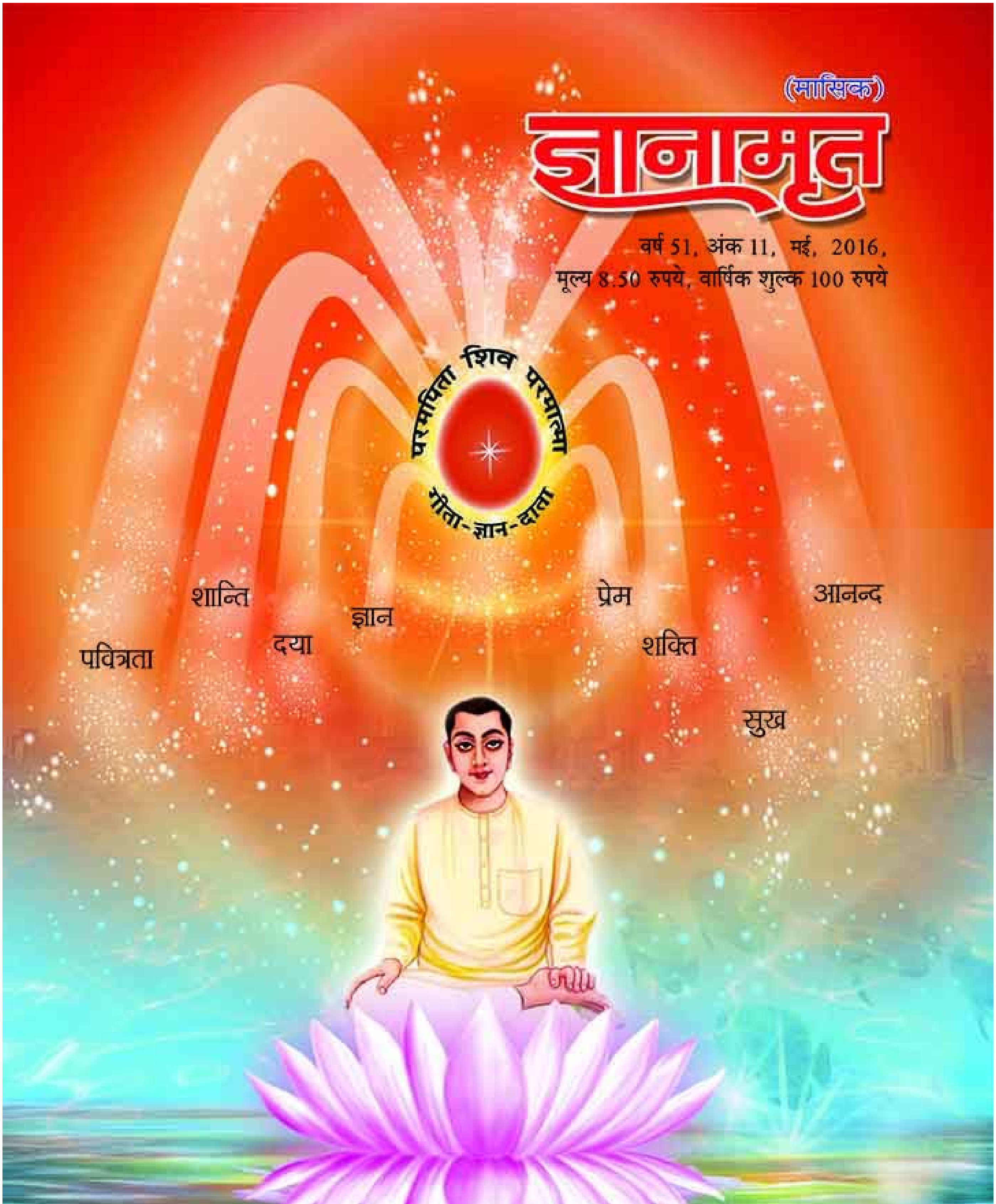
(मासिक)
ज्ञानामृत
वर्ष 51, अंक 11, मई, 2016,
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये
परमपिता शिव परमात्मा
गीता-ज्ञान-दाता
शान्ति
प्रेम
आनन्द
ज्ञान
पवित्रता
दया
शक्ति
सुख

1. पोखरा (नेपाल) - नेपाल के प्रधानमंत्री भ्राता खड्ग प्रसाद ओली को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. परणीता बहन। **2. लोहरदगा (गुमला)** - झारखण्ड की राज्यपाल महामहिम बहन द्रौपदी मुरमू का स्वागत करते हुए ब्र.कु. शांति बहन। **3. दिल्ली (विकासपुरी)** - केन्द्रीय रेल मंत्री भ्राता सुरेश प्रभु को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सतीश बहन। **4. जयपुर (राजा पार्क)**- शिव दर्शन मेले का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के खान, वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री भ्राता राजकुमार रिणवा, महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री बहन अनीता भदेल, ब्र.कु. पूनम बहन तथा अन्य। **5. बून्दी** - शिव दर्शन मेले का उद्घाटन करते हुए राजयोगी ब्र.कु. रमेश भाई, ब्र.कु.आत्म प्रकाश भाई, ब्र.कु. हेमा बहन, ब्र.कु. उषा बहन, ब्र.कु. रजनी बहन तथा अन्य। **6. सैफयी-करहल (उ.प्र.)** - उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता अखिलेश यादव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. निधि बहन तथा ब्र.कु. पूनम बहन। **7. चंडीगढ़** - सुप्रसिद्ध धावक भ्राता मिल्खा सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. दीपक भाई तथा ब्र.कु. सीमा बहन। **8. दिल्ली (हरिनगर)** - अन्नामलाई यूनिवर्सिटी की फैकल्टीज के लिए आयोजित सम्मान समारोह का उद्घाटन करते हुए इग्नू के पूर्व कुलपति डॉ. गोपीनाथ प्रधान, दिल्ली मैट्रो के मुख्य जन संपर्क अधिकारी भ्राता अनुज दयाल, ब्र.कु. शुक्ला बहन, ब्र.कु. सुन्दरलाल भाई, ब्र.कु. अशोक गाबा तथा अन्य।

संजय की कलम से

ईश्वरीय प्रेम का अनोखा रस

शारीरिक, लौकिक अथवा नश्वर सम्बन्धों का रस तो हमने जन्म-जन्मान्तर लिया है परन्तु परमात्मा का सम्बोधन करते हुए जो हम गाते आये हैं कि हे प्रभो, आप ही हमारे मात-पिता, सखा-स्वामी, विद्याप्रदाता और हमारे सर्वस्व (त्वमेव माता च पिता त्वमेव) हो, क्या उन सम्बन्धों का अनुभव हमने किया है? जो ऐसे गायन-योग्य, मधुर सम्बन्ध हैं उनका हम अनुभव ही न करें, यह तो गफलत और अलबेलेपन का सूचक है। जिस प्रभु को प्यार का सागर कहा जाता है, उनके अनोखे प्यार का रस ही जिसने न लिया हो वह कितना भाग्यहीन है। उन जैसा सच्चा प्यार, जिसमें सभी सम्बन्धों की रसना भरी हुई हो, कोई दे ही नहीं सकता, तब यदि वह प्यार हमने न पाया तो क्या पाया?

मुझे अनुभव है कि जब हम किसी ऐसे बच्चे से बात करते हैं जिसकी माता या पिता का साया उसके सिर से उठ गया हो तो माता या पिता के बारे में उससे पूछने पर उसके नेत्र गीले होने लगते हैं। परन्तु, हाय-हाय, मनुष्य की यह कैसी कठोरता है कि जो आत्मा का माता-पिता और सर्वस्व है, उससे सम्बन्ध-विच्छेद हुए होने पर उसके मन में उस प्रियतम प्रभु के प्यार के लिये कसक भी पैदा नहीं होती। क्या मनुष्य के मन में प्यार का पानी सूख गया है? क्या उसके प्यार के सब मोती लुट चुके हैं? सांसारिक प्यार के बिना उसे नींद नहीं आती, प्रभु का प्यार पाने के लिये उसके पास समय भी नहीं है। यह स्वयं से कैसा धोखा है जिसके कारण मनुष्यात्मा अपार प्यार से वंचित है!!

हरेक को मालूम होना चाहिए कि आत्मा ही परमात्मा नहीं है बल्कि परमात्मा से हमारे (आत्मा के) सभी सम्बन्ध हैं और परमात्मा प्यार का सागर है। वह प्यार का सागर अब बाँहें पसार कर कहता है, 'मैं ही आपका सच्चा मीत हूँ, मेरे लाल, आओ तुम्हें प्यार के झूले में झुलाऊँ, माया के झंझटों से थके मेरे वत्स, आओ, तुम्हें स्थायी शान्ति का मधुर रस पिलाऊँ! परन्तु हे वत्स, विकारों का विष पीना छोड़ अब अमृत का प्याला पीओ तो मुझ अमरनाथ को आप सामने पाओगे।'

बहुत-से ज्ञान-निष्ठ, योग-युक्त प्रभु-वत्स ऐसे हैं जिन्हें उस परमपिता का भरपूर प्यार मिला है। प्रभु से सभी सम्बन्धों का प्यार पाने की अब शुभ वेला है जिसे 'संगमयुग' कहा जाता है। शुभं अस्तु, शीघ्रं अस्तु! ❖

अमृत सूची

- क्षमा करो और जाओ भूल (सम्पादकीय) 4
- सचित्र सेवा समाचार 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के ...8
- सचित्र सेवा समाचार............10
- संविधान के पूर्व का विश्व 11
- अंदर जाने वाली 'सूचना' 14
- बोलना सिखाया गूंगे को........15
- त्याग, तपस्या और सेवा........16
- स्वयं की तलाश................18
- रक्षक है भगवान...............20
- मानव जीवन में धन............22
- कोमल है कमजोर नहीं 24
- सचित्र सेवा समाचार 27
- भक्तिमार्ग से ज्ञानमार्ग..........28
- अब शान्ति चाहने लगा हूँ......29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- मैं अवसाद मुक्त हो गई 32
- 21 वर्ष लगे, 21 कदम की दूरी तय करने में...............33
- 'पत्र' सम्पादक के नाम 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

क्षमा करो और जाओ भूल

कहा जाता है कि 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' अर्थात् क्षमादान समर्थ या शक्तिशाली व्यक्ति ही कर सकता है। क्षमा, कायरता या दुर्बलता का लक्षण नहीं अपितु आत्मबल तथा बुद्धिमत्ता का चिह्न है। क्षमा करने की क्षमता तो केवल वीरों में ही होती है। इसके लिए दया या रहम का गुण भी आवश्यक है। भगवान के लिए कहा जाता है कि वे सर्व समर्थ होने के साथ-साथ दया के सागर भी हैं जो हमारी भूलों को क्षमा कर देते हैं। क्षमा करके भूल जाने वाली बात नेकी कर दरिया में डालने वाली कहावत की तरह है। क्षमा करो और भूल जाओ, यह महान कर्त्तव्य महान पुरुषों ने करके दिखाया है।

महात्मा ईसा मसीह सहनशीलता और क्षमा की प्रतिमूर्ति थे। उनको यहूदियों के द्वारा क्रॉस या सूली पर चढ़ाने का हुक्म दिया गया था। राजा को उनके चापलूस एवं सहयोगियों ने बताया कि महात्मा ईसा अपने जादू के बल से यहूदियों में एक नये धर्म का प्रचार करना चाहते हैं। राजा ने इस डर से कि उनकी सारी प्रजा कहीं नये पैगम्बर के अधीन होकर मेरे विरुद्ध न खड़ी हो जाये, महात्मा ईसा मसीह पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया और गवाहों को भी शासन के पक्ष में कर लिया। ईसा मसीह की पैरवी करने के लिए कोई वकील नहीं था, अत: मुकदमे में उनकी हार हुई। दण्ड नियम के मुताबिक ईसा मसीह पर भारी भरकम लकड़ी का क्रूस लादकर उन्हें श्मशान ले जाया गया। इसके बाद क्रूस को जमीन में गाड़कर ईसा मसीह को क्रूस पर टांगा गया और उनके शरीर में कीले गाड़ी गईं। जब उन्होंने काल या मृत्यु को अपने निकट पाया तो अपने विरोधियों और क्रूस पर चढ़ाने वाले लोगों के लिए उन्होंने भगवान से प्रार्थना की – हे प्रभु, इन्हें क्षमा करना क्योंकि ये लोग नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।

क्षमा सदा-सर्वदा हितकारी

क्षमा माँगना और क्षमा करना दोनों महान गुण हैं जो मनुष्य के मन को हल्का कर उसे सुखी बनाते हैं। क्षमा माँग कर या क्षमादान कर हम किसी पर कोई एहसान नहीं कर रहे होते वरन् अपने मन के सुकून का उपाय कर रहे होते हैं। शोध में पाया गया है कि लम्बे समय तक प्रतिशोध, जलन, ईर्ष्या, क्रोध, आत्मग्लानि, दुख, धोखा इत्यादि के विचार रखने से तन और मन रुग्ण हो जाते हैं जिसके लिए क्षमा से अच्छी कोई दवा नहीं है। क्षमा सदा और सर्वत्र सभी के लिए फायदेमन्द होती है। यह एक ऐसी अद्‌भुत चीज है जो चाहे माँगी जाए या दी जाए, मनुष्य को महान और देवतुल्य बनाती है।

क्षमा है बड़प्पन की निशानी

कवि रहीमदास का बहुत प्रचलित दोहा है–'क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात.....' अर्थात् जो क्षमा करता है वही बड़ा कहा जाता है। अब बड़ा बनना तो हम में से हरेक चाहता है लेकिन देखने में आता है कि आज यदि कोई छोटा-सा बच्चा भी हमारे आगे कोई गलती करता है तो हम उसकी आयु और समझ की सीमा न देखते हुए उस पर गुस्से से लाल-पीले हो जाते हैं और मारने के लिए दौड़ पड़ते हैं। जब बच्चों के प्रति हमारा इस प्रकार का अधैर्य, असहनशीलता और क्रोध करने का रवैया रहता है तो हम अपनी बराबर की उम्र के लोगों या उससे कम उम्र के लोगों को किस प्रकार क्षमा कर सकेंगे। याद रहे, क्षमाशील बनना विवेकवान व्यक्ति की पहचान है। सर्व कार्य क्षमा से सिद्ध होते हैं, इससे सारे संसार को वश में किया जा सकता है। अलैक्जेण्डर पोप का कथन है कि to err is human; to forgive, divine अर्थात् त्रुटि करना मानवीय है, क्षमा करना ईश्वरीय। कहते हैं, किसी ने

ईश्वर से पूछा कि किस प्रकार के इन्सान आपके नजदीक होते हैं। ईश्वर ने जवाब दिया– वे इन्सान जो बदला लेने की क्षमता रखने के बावजूद दूसरों को माफ कर देते हैं।

क्षमा मांगने से अहम भाव का विध्वंस

कहते हैं, भूल होना प्रकृति है, मान लेना संस्कृति है और सुधार लेना प्रगति है। क्षमा माँगने से अहंकार का ध्वंस होता है और शांति का अनुभव होता है जो आत्मा का प्रथम मूल गुण है। लेकिन यह क्षमा दिल से मांगी जानी चाहिए तथा इसके बाद गलती का सुधार कर लेना चाहिए।

- क्षमा शीलवान का शस्त्र है; क्षमा अहिंसक का अस्त्र है।
- क्षमा, प्रेम का परिधान है; क्षमा, मानवता का मान है।
- क्षमा, विश्वास का विधान है; क्षमा, नफरत का निदान है।
- क्षमा, पवित्रता का प्रवाह है; क्षमा, नैतिकता का निर्वाह है।
- क्षमा, सद्‌गुण का संवाद है; क्षमा, अहिंसा का अनुवाद है।
- क्षमा, दिल का दया-भाव है; क्षमा, अहम् का अभाव है।
- क्षमा, प्रभु से प्रीत है; क्षमा, सदाचार की सीख है।
- क्षमा, स्वयं का सम्मान है; क्षमा, खुशियों की खान है।

क्षमा करना सबसे बड़ा परोपकार

किसी को उसकी भूल के लिए क्षमा करना और उसे आत्मग्लानि से मुक्ति दिलाना बहुत बड़ा परोपकार है। क्षमा करने की प्रक्रिया में क्षमा करने वाला क्षमा पाने वाले से कहीं अधिक सुख पाता है। अगर सोचा जाये तो छोटी से छोटी या बड़ी से बड़ी गलती को भी भूतकाल में जाकर ठीक नहीं किया जा सकता, उसके लिए क्षमा से अधिक कुछ नहीं मांगा जा सकता। किसी को क्षमा करने से पहले सोचें कि अगर हम किसी को क्षमा नहीं कर सकते तो हम अपने माता-पिता या ईश्वर से अपने लिए माफी की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? किसी को माफ न करके हम समझते हैं कि हम उसको सज़ा दे रहे हैं लेकिन यह उसके लिए सज़ा नहीं बल्कि स्वयं के लिए सज़ा है। सोचिये कि अगर क्षमा नाम का परोपकार इस दुनिया में न हो तो कोई किसी से कभी प्रेम ही नहीं कर पायेगा। love is nothing without forgiveness and forgiveness is nothing without love.

जितना आप अंदर से प्रसन्न, संतुष्ट व सकारात्मक होते हैं, उतना ही जल्दी आप दूसरों को क्षमा कर पायेंगे।

क्षमा करने से आपको डबल लाभ होता है। एक तो सामने वाले को आत्मग्लानि भाव से मुक्त करते हैं व दूसरा दिलों की दूरियों को दूर कर दिल में एक अच्छी जगह बना सकते हैं।

क्षमा न मांगने या न करने का बोझ जन्म-जन्मांतर

अगर हमारे शब्दों या कर्मों ने किसी को आहत किया है या हम किसी के शब्दों या कर्मों से आहत हुए हैं तो हमें क्षमा माँगने या क्षमा करने में देरी नहीं करनी चाहिए क्योंकि यदि हम मन पर उस बोझ को ज्यादा दिन रखेंगे तो वह हमारे मन को पंगु बना देगा, मन पर लगा यह घाव समय के साथ-साथ नासूर बन जायेगा और अगर उसी स्थिति में हमारा देह छूट गया तो अगले ना जाने कितने जन्मों तक उस आत्मा के साथ यह हिसाब-किताब चलता रहेगा। इसलिए समय रहते क्षमा करें या क्षमा मांग लें। इसी में उसका तथा हमारा कल्याण है।

सप्ताह में एक दिन क्षमा दिवस मनायें

अपनी कितनी भी बड़ी गलती के लिए हम जितना जल्दी खुद को माफ कर देते हैं उतना ही जल्दी हमें दूसरों को भी माफ कर देना चाहिए। सप्ताह में एक दिन निश्चित करें, उस दिन अपने मन की जाँच करें कि कहीं मन में किसी के लिए थोड़ा सा भी घृणा या द्वेष भाव, ईर्ष्या भाव, नफरत का भाव है तो उसे सच्चे दिल से माफ करके अपने मन को साफ करें। इसी तरह अगर किसी को हमारे बुरे व्यवहार से ठेस पहुँची है तो उससे माफी मांगने में देरी ना करें। जैसे हफ्ते में एक दिन हम अपने घर की सफाई करते हैं, वैसे ही मन की भी सफाई करें। यह मन की सफाई आपको अनेकों शारीरिक और मानसिक रोगों से बचायेगी।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

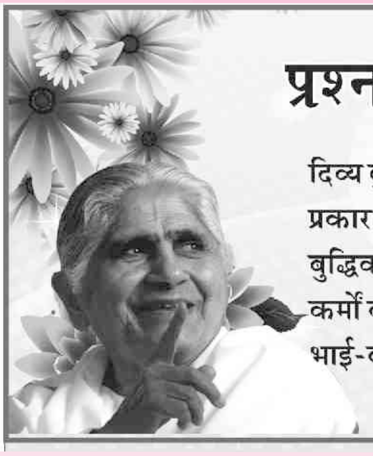

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- बाबा से लाइट और माइट लेने का आधार क्या है?

उत्तरः- अन्दर देखो, मैं कौन! इससे लाइट हो जाते हैं, मेरा कौन, तो माइट आ जाती है। फिर जैसे कि बाबा लाइट-हाउस बना करके सेवा करा रहा है। देह से न्यारा रहने से बाबा का प्यार अपने आप चला रहा है। हमको न्यारा रहना है। जहाँ भी हाज़िरी है वहाँ सेवा है। मुझ आत्मा से सबको अनुभव हो कि बाबा मेरा कैसा है! विकर्माजीत, कर्मातीत, अव्यक्त रहने की स्थिति जो बाबा ने साकार में अपनी बनाई, बाबा की वह स्थिति आज दिन तक भी सेवा कर रही है। तो हम बच्चों को भी यह ध्यान रखना है। पहले तो भूल से कोई भी साधारण कर्म हमारे से न हो। श्रेष्ठ कर्म ऑटोमेटिक आवाज से परे ले जाता है। बाबा ने कहा कि साइलेंस में ऐसा रहो जो सन्नाटा हो जाये। अभी सन्नाटा शब्द वन्डरफुल है, अच्छा अनुभव हो जाता है। तो यही बात मुख पर हो कि बाबा हमारा माता-पिता, शिक्षक-सखा, सतगुरु है। इन पाँचों सम्बन्धों की अन्दर फीलिंग हो। कितनी अच्छी पढ़ाई और पालना है, वन्डर है। बाबा कहते हैं, स्वदर्शन चक्रधारी हो करके रहो। मैं कहती हूँ, यह एक रॉयल्टी है, आवाज़ में न आना, शान्ति फैलाना, चेहरा मुसकराता रहे। मैं बाबा की, बाबा मेरा, यह भासना खुद को भी हो, जो भी सभा में बैठे हुए हों, उठने का दिल न करे। हर घण्टे चेक करो, कोई व्यर्थ संकल्प तो नहीं आया? बचाओ अपने आपको क्योंकि व्यर्थ आयेगा ना तो लम्बा हो जायेगा, इसलिए फौरन ही संकल्प को ऐसा शान्त कर दो जो आजू-बाजू शान्ति के वायब्रेशन जायें।

प्रश्नः- स्मृति, वृत्ति और दृष्टि कब शुद्ध और शक्तिशाली हो जाती है?

उत्तरः- हम सब एक बाबा के बच्चे, हम सबका घर एक है। अब घर जाना है, निर्वाणधाम जाना है, निमित्त मात्र यहाँ इस दुनिया में हैं, बाबा से जो पढ़ाई मिली है वो धारणा में आ जाये। पढ़ाई में है सच्चाई-सफाई, अपने दिल पर हाथ रख देखो, सच्चाई है? सच्चाई में बल है और अच्छे कर्म का फल है। अच्छे कर्म करो क्योंकि कराने वाला करा रहा है। करनकरावनहार स्वामी, कराने वाला वो है, पर निमित्त करने वाले हम हैं। क्या करने का है? उसके लिये अच्छी शिक्षा मिली हुई है। रूहानियत क्या है, आप सब इसकी गहराई में जाओ। अन्दर आत्म-अभिमानी स्थिति से, रूहानियत में रहने से स्मृति, वृत्ति और दृष्टि शुद्ध और शक्तिशाली हो जाती है। अन्दर की स्मृति में क्या है? मैं कौन? मेरा कौन? जब मेरा कौन है तो अष्ट शक्तियाँ अपने आप काम करती हैं। छतरी में आठ तीलियाँ होती हैं। बाबा को पकड़ने से अष्ट शक्तियाँ ऑटोमेटिकली हमारी रक्षा करती हैं क्योंकि बाबा के सिकीलधे बच्चे हैं ना, बाबा चाहता है कि मेरे बच्चों को कोई धूप-छांव का प्रभाव न पड़े। अभी जहाँ-जहाँ बाबा के स्थान हैं, वहाँ का वायुमण्डल ऐसा शक्तिशाली होना चाहिए। मैं एक निवेदन करती हूँ, ट्रस्टी और विदेही रहने की ऐसी प्रैक्टिस हो, जो

कोई आपको देखे, उसे बाबा दिखाई पड़े। मुझे खुशी है, मैंने जनक नाम की लाज रखी है। कभी मैंने नहीं कहा कि यह मेरा है, मेरा कुछ नहीं। मेरा तो एक बाबा, दूसरा न कोई। हमारे सभी बहन-भाइयों ने यह मंत्र अच्छा पक्का किया जो मन में यही भावना है कि मुझे ट्रस्टी और विदेही रहना है। मैं सभी को दिल से एक लिफ्ट गिफ्ट में दे रही हूँ, ऊपर में जाने के लिए। जैसे सीढ़ी के चित्र में सतयुग से लेकर नीचे कलियुग तक उतरते-उतरते पहुँच गये हैं, अभी यहाँ से उड़कर ऊपर चढ़ने का है। ऊपर जाकर क्या करने का है, कैसे जायेंगे? बाबा के साथ जायेंगे। उसके लिए विकर्माजीत, कर्मातीत और अव्यक्त स्थिति में रहने का अभ्यास जरूरी है। तो हर एक अपनी स्थिति ऐसी बनाए जो मैं बाबा की, बाबा मेरा। खुशी जैसी खुराक नहीं, चिंता कभी करनी नहीं है, निश्चिंत रहना है।

प्रश्नः- बाबा हमारा रक्षक है, किस-किस बात में रक्षा करता है?

उत्तरः- बाबा हमारा शिक्षक भी है, रक्षक भी है। शिक्षा भी देता है पर रक्षा ऐसी करता है जो हमारे से, कोई प्रकार से, शिक्षा के विरुद्ध कोई भी ऐसी-वैसी बात न हो, जो बाबा का नाम बाला न कर सकें। बाबा का नाम बाला करना माना ही फॉलो फादर। जितना जो बाबा से प्यार लेते हैं, वो प्यारे बन जाते हैं। हमारे अन्दर पहले सूखापन था, लाइफ में मज़ा ही नहीं था परन्तु बाबा का बनने से प्यार में खुश हो गये। प्यार कितनी अच्छी चीज़ है। फिर कुछ चाहिए नहीं, भोजन यज्ञ का मिलता है। कपड़ा भी धुलाई होकर मिलता है। वन्डर तो यह है कि हम रोज़ाना साफ किया हुआ कपड़ा पहनते हैं, कल वाला कपड़ा आज नहीं पहनते हैं। हमेशा सिम्पल रहने का सैम्पल बनना है, यह लक्ष्य रखें, यह चाहिए, वह चाहिए... कहाँ रखेंगे? सोने के लिए खटिया है, बाथरूम है, बैठने के लिए कुर्सी है और क्या चाहिए। कभी अलमारी को ताला नहीं लगाया होगा। जैसे बाबा सिम्पल रहा, ऐसे हम बच्चों को भी सिखाता है, बच्चे सिम्पल रहो, सैम्पल बनो। गद्दी पर बाबा बैठा हुआ था, सिर्फ पैड-पेन्सिल रखी थी, बाबा पत्र लिखता था। कमरे में और कोई चीज़ नहीं। तो जैसे हमारा मीठा बाबा साकार में रहा ऐसे हमें भी रहना है। कर्मातीत बनना है तो पहले विकर्माजीत बनना होगा, फिर व्यक्त भाव से परे होकर अव्यक्त स्थिति में रहना है।

प्रश्नः- चित्त और चिंतन में क्या फर्क है?

उत्तरः- कहते हैं, सत् चित्त आनन्द स्वरूप। चित्त में सच्चाई के अलावा और कुछ है ही नहीं। दिल, मन, चित्त में सच्चाई है, इसके बिना और कोई चिंतन करना आता ही नहीं है। चिंतन में है बस, मेरा बाबा। बाबा ने जो इतना मीठा ज्ञान दिया है वही चिंतन में होने से चित्त बड़ा साफ और सच्चाई से भरपूर है। बाबा का बनने से जो सुख मिला वो सुनाने में आता नहीं है, एक-दो को आप समान बनाने के लिए है। इसके सिवाय और कोई चिंता नहीं है, कोई चिंतन नहीं है क्योंकि चिंता उसकी की जाए जो अनहोनी हो। मन में मनमनाभव है तो मन शान्त है, बुद्धि श्रेष्ठ है इसलिए व्यर्थ सोचते नहीं हैं। अगर व्यर्थ चिंतन होगा तो सत् चित्त आनन्द स्वरूप नहीं होंगे इसलिए हमेशा कहती हूँ, चित्त में सच्चाई हो। शुभ चिंतन में रह करके अपने लिए भी और औरों के लिए भी कभी किसी भी कारण से व्यर्थ नहीं सोचो। सेवा करते मनमनाभव और मध्याजीभव होकर रहने से, श्रेष्ठ चिंतन करने से बहुत सुख मिलता है। बाबा तो सारे विश्व को सुख-शान्ति दे रहा है, हमारी बुद्धि भी हदों से पार रहे, कोई भी बात की हद नहीं हो। बाबा रचता है, रचना का ज्ञान दे रहा है। हमें चारों सब्जेक्ट्स में फुल मार्क्स लेने हैं। एक समय था, मेरे पास पेस्ट और टुथ ब्रुश भी नहीं थी, कंघी भी नहीं थी, नीम की दातून करती थी। पालड़ी में बगीचे में मोर नाचते थे, वहाँ बैठकर मैं अमृतवेला करती थी, बाबा ने शुरूआत में कैसे सेवायें कराईं...वन्डर है। देश-विदेश जहाँ भी जाओ, बाबा के बच्चों को देख मेरे दिल की भावना है, हर एक के दिल में बाबा ही हो। ❖

संविधान के पूर्व का विश्व का इतिहास

(पश्चिमी दुनिया के हिसाब से) भाग-2

ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

पश्चिमी दुनिया के हिसाब से संविधान में क्या-क्या होना चाहिए इसके बारे में हमने पूर्व के लेख में विचार किया। आज उसी बात को आगे बढ़ा रहे हैं क्योंकि ब्रिटेन की राज्यपद्धति और उसके द्वारा विश्व का कारोबार कैसे हुआ, यह जानकारी भावी विश्व कारोबार के लिए जरूरी है। हम विश्व के महापरिवर्तन के बाद सतयुगी दुनिया के राज्य अधिकारी बन जायेंगे। सतयुग-त्रेतायुग में हम महाराजा, महारानी बनते हैं फिर द्वापरयुग से दूसरी आत्मायें आने के कारण राजा, रानी बनते हैं। इसकी भेंट में इंग्लैण्ड का राज्यकारोबार समझना बहुत जरूरी है क्योंकि कलियुग के अंत में भी उन्होंने बहुत ही अच्छी रीति राज्यकारोबार किया और हम जानते हैं कि इंग्लैण्ड ने करीब 200 वर्षों तक आधे विश्व पर राज्य किया जिसके लिए कहा जाता था कि ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य कभी अस्त नहीं होता था।

एक विचित्र बात तो यह है कि स्पेन के कोलंबस ने अमेरिका देश ढूँढ़ा परंतु अमेरिका पर उनकी मातृभूमि के लोगों का आधिपत्य नहीं रहा परंतु इंग्लैण्ड ने उन पर आधिपत्य स्थापित किया। कैनेडा तथा यू.एस. के ऊपर भी इंग्लैण्ड ने राज्य किया। इसी प्रकार वास्को-दि-गामा, जो पुर्तगाल से था, ने समुद्रमार्ग से भारत पहुँचने का रास्ता खोजा और इस कारण भारत में पहले-पहले पोर्तुगीज आये। अंग्रेज लोग बाद में व्यापार करने आये और धीरे-धीरे उन्होंने भारत में अपना राज्य प्रस्थापित किया। इंग्लैण्ड में कोई संविधान नहीं था फिर भी कारोबार सुचारु रूप से चलता रहा है। वहां पर राजशाही होते हुए भी साथ में House of Lords & House of Commons भी हैं। ये दोनों सदन और राजशाही सब मिलकर प्रेमपूर्वक कारोबार चला रहे हैं। इंग्लैण्ड जैसे एक छोटे से देश ने आधे से अधिक विश्व पर एक साथ इतने अधिक समय तक राज्य किया। सोचने की बात है कि हमें जब आधाकल्प समस्त विश्व पर राज्य करना है तो हमें कितनी बातें सीखनी पड़ेंगी। मैं पाठकगण से निवेदन करना चाहता हूँ कि इस पर जरूर विचार करें।

एक मुख्य बात यह है कि इंग्लैण्ड की तत्कालीन महारानी ने वायसरॉय (Viceroy) द्वारा भारत तथा अन्य देशों पर कारोबार किया और हरेक वायसरॉय की सत्ता एवं कार्यकाल निश्चित किया। उदाहरण के लिए, रॉबर्ट क्लाइव ने प्लासी का युद्ध जीतकर इंग्लैण्ड की नींव भारत में पक्की की, फिर भी जब उनका कार्यकाल समाप्त हुआ तो उन्हें वापिस बुला लिया गया। यह बहुत अच्छी पद्धति है। इसी आधार पर भारत सरकार में भी हरेक अधिकारी को तीन साल या पाँच साल तक ही एक जगह पर रखते हैं और फिर तबादला (transfer) कर देते हैं।

एक बार मैं हांगकांग में भारत के राजदूत (Ambassador) से मिल रहा था। मैंने उनसे 3 साल में ट्रांसफर की बात पूछी तो उन्होंने कहा कि कोई ज्यादा समय एक स्थान पर रहते हैं तो उन्हें localities की बीमारी अर्थात् उनकी जड़ें बहुत मजबूत हो जाती हैं और फिर उन्हें कोई भी हटा नहीं सकते हैं इसलिए ट्रांसफर का यह सिस्टम बना हुआ है। भारत में पहले से यह पद्धति नहीं थी। जैसे मराठा साम्राज्य की स्थापना छत्रपति शिवाजी महाराज ने की थी और बाद में उसे सम्भालने के लिए पेशवा को नियुक्त किया था। पेशवा ने बड़ौदा, ग्वालियर, इंदौर आदि स्थानों पर सूबेदार नियुक्त किये पर उन्हें बदली नहीं किया गया, परिणामस्वरूप उनका वहाँ कारोबार जम गया और वे सूबेदार की बजाय वहां के राजा बन गये अर्थात् बड़ौदा के गायकवाड़, इंदौर के होल्कर, ग्वालियर के सिंधिया आदि

राजा बन गये और मराठा साम्राज्य की जड़ें एवं पकड़ ढीली हो गई। विश्व इतिहास में ये बातें भी सीखने को मिली हैं।

इसी हिसाब से देखा जाये तो भारत सरकार जो तीन साल के बाद अपने अधिकारियों का तबादला करती है और 60 वर्ष के बाद सेवानिवृत्त करती है, ये बातें अच्छी हैं। सुप्रीम कोर्ट में भी इसी प्रकार का कारोबार चलता है इस कारण नये-नये लोग न्यायाधीश या मुख्य न्यायाधीश आदि बनते हैं। परंतु सोचने की बात यह है कि जैसे भारत के संविधान के अनुसार भारत में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की सेवानिवृत्ति की उम्र 65 वर्ष है परंतु अमेरिका के संविधान के अनुसार सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य या अन्य न्यायाधीश की सेवानिवृत्ति की उम्र तय नहीं की गई है। वहां तो न्यायाधीश खुद ही तय करता है कि उसे सेवानिवृत्त कब होना है अर्थात् जब तक वह चाहे तब तक वह न्यायाधीश बनकर रह सकता है। उसे कोई भी निकाल नहीं सकता। उदाहरण के लिए, अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश वॉरेन हेस्टिंग्ज ने उम्र के 94 वर्ष तक अमेरिका के सर्वोच्च न्यायाधिपति के रूप में कार्य किया और फिर काम करने की क्षमता समाप्त होने के कारण सेवानिवृत्ति ली। अमेरिका में अपनी मर्जी से सेवानिवृत्ति लेने के कारण न्यायाधीश निष्पक्ष होकर न्याय करते हैं परंतु भारत में सेवानिवृत्ति की मर्यादा होने के कारण कई बार न्यायाधीश सेवानिवृत्ति के समय सरकार के हक में ही फैसले देते हैं क्योंकि सेवानिवृत्ति के बाद किसी कमीशन आदि पर नियुक्त होने की बहुतों की इच्छा होती है।

हमें भी यज्ञ के संचालन के कारोबार के बारे में सोचना चाहिए कि दैवी परिवार में इस प्रकार के ट्रांसफर करने चाहिएँ या नहीं? हमारे दैवी परिवार में तो ऐसा है कि जो जिस स्थान पर रहता है वह अंत तक वहीं पर रहता है। भारत के संविधान के आधार पर Companies Act में भी Directors का कार्यकाल rotation आधार पर है और अभी महाराष्ट्र चैरिटी कमिश्नर एक्ट के अनुसार नये ट्रस्टीज़ में कम से कम आधे ट्रस्टीज़ 3 या 5 साल में रिटायर होंगे अर्थात् एक व्यक्ति एक स्थान पर हमेशा नहीं रह सकता। ब्रिटेन से यह बात सीखने जैसी है कि कैसे संविधान के आधार पर और राज्य कारोबार के आधार पर बैलेंस बनाकर कारोबार करें।

ब्रिटेन में संविधान नहीं है परंतु वहां की संसद जो भी कानून बनाती है वह संविधान बन जाता है। लेकिन वहां पर अनुशासन बहुत अच्छा है अत: वहां पर चुनाव भी होते हैं और परिवर्तन भी होता है। उदाहरण के लिए द्वितीय विश्वयुद्ध के समय विंस्टन चर्चिल के द्वारा बहुत अच्छा कारोबार हुआ और जर्मनी पर जीत प्राप्त की। परंतु उसके बाद जब वहां पर चुनाव हुए तब विंस्टन चर्चिल की पार्टी हार गई और Lord Clement Attlee की Labour Party की जीत हुई अर्थात् परिवर्तन हुआ। रशिया में भी संविधान के आधार पर ही कारोबार चलता है परंतु स्टालिन की तानाशाही के समय वहां पर जो चुनाव होते थे वे फर्जी होते थे अर्थात् एक ही प्रतिनिधि खड़ा रहता था और परिणामस्वरूप 99% से वह प्रतिनिधि जीतकर आता था। रशिया के संविधान अनुसार सबको अनिवार्य रूप से मतदान करना पड़ता था, नहीं तो जुर्माना भरना पड़ता था। भारत में भी तत्कालीन गुजरात सरकार ने अनिवार्य रूप से मतदान करने को कानून बनाया था परंतु सुप्रीम कोर्ट ने इसकी स्वीकृति नहीं दी। इसी प्रकार चीन में भी तानाशाही का संविधान है। ऐसे संविधानों का अध्ययन करने से मालूम पड़ता है कि सतयुग, त्रेतायुग में राज्य कारोबार राजाओं के हाथ में होगा परंतु राजा तानाशाह नहीं होंगे।

प्यारे ब्रह्मा बाबा ने सतयुगी दुनिया का वर्णन तीन शब्दों में किया है – अटल, अखण्ड और निर्विघ्न राज्य। यह सतयुगी राज्य इस प्रकार कैसे चलता है, उसे जानना जरूरी है। हमारे ईश्वरीय परिवार में भी चुनाव एवं चयन (Election & Selection) होता है। संगमयुग पर शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा सबको एक समान ज्ञान देते हैं और कहते हैं कि जिस को जो पद पाना है, वह अपने पुरुषार्थ के आधार पर पा सकते हो

अर्थात् सतयुगी पद की प्राप्ति का आधार संगमयुग का पुरुषार्थ है और इसके लिए बाबा ने हमें तीन सर्टिफिकेट्स लेने का पुरुषार्थ करने के लिए कहा है। वे तीन सर्टिफिकेट्स हैं- **1) स्व-पसंद, 2) लोकपसंद और 3) प्रभुपसंद।**

स्व-पसंद – हरेक को अपने आप को पसंद करना अर्थात् स्वयं से और स्वयं के पुरुषार्थ से सन्तुष्ट होना क्योंकि बाबा ने कहा है कि स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन होगा इसलिए पहले स्वपरिवर्तन करेंगे तो स्वपसंद का सर्टिफिकेट स्वयं को दे सकेंगे। लोकपसंद बनने की आवश्यकता इसलिए है कि लोग भविष्य में आपको अपने राजा के रूप में स्वीकार करें। एक बार जब मैं ऑस्ट्रेलिया गया था तब इस बात पर एक बहन ने मुझे पूछा था कि राजशाही अच्छी नहीं होती है, उसमें लोगों पर बहुत अत्याचार होते हैं तो सतयुग में राजशाही क्यों होगी? मैंने उस बहन से कहा कि आप आज की दुनिया के इतिहास के अनुसार राजशाही के बारे में नहीं सोचो। अगर हमारे मम्मा-बाबा और दादियाँ महाराजा महारानी बनेंगे तो क्या आप उनके राज्य में आना पसंद करेंगे? तो उस बहन ने शीघ्र ही हां किया, कहा कि उनके राज्य में आना मैं जरूर पसंद करूँगी। तो इस प्रकार हमें लोकपसंद का सर्टिफिकेट लेना है।

प्रभुपसंद बनने के बारे में मैं एक प्रचलित कहानी बताता हूँ - एक कुम्हार मटके बनाकर बेचने का व्यापार करता था। उसके पास एक मटका था जिसमें नीचे एक सुराख था इस कारण उस मटके को कोई खरीददार नहीं था और वह कुम्हार के पास पड़ा रहता था। कुम्हार भी उसके बारे में सोचता था कि मैं इसका क्या करूँ? एक दिन शिव मंदिर का एक पुजारी कुम्हार के पास आया और कहा कि मुझे एक ऐसा मटका दो जिसमें से जल की एक पतली-सी धार शिवलिंग पर पड़ती रहे। कुम्हार ने वह मटका पुजारी को दिखाया तो पुजारी खुश हुआ। पुजारी उसे मंदिर में ले गया और शिवलिंग के ऊपर प्रस्थापित कर दिया। मटके से जलधारा अविरत बहती रही और शिवलिंग का जलाभिषेक होता रहा। इस प्रकार जो प्रभुपसंद होता है उसे प्रभु अपने पास लाकर अपना कार्य कराते हैं। यह प्रभुपसंद की बात बहुत गहरी है। शिवबाबा ने नई दुनिया की स्थापना के कार्य के लिए ब्रह्मा बाबा को निमित्त बनाया और उन द्वारा अपना कारोबार किया। ऐसे ही प्यारे ब्रह्मा बाबा ने भी जब 24 जून, 1965 को मातेश्वरी जी अव्यक्त हुए, उसके बाद 1 अप्रैल 1966 को दादी प्रकाशमणि जी एवं दीदी मनमोहिनी जी के ऊपर कलश रखा और दादी प्रकाशमणि जी को संस्था की मुख्य प्रशासिका और दीदी मनमोहिनी जी को अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका के रूप में नियुक्त किया। अगर हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय में वंश परंपरा का कारोबार होता तो मातेश्वरी जी के बाद ब्रह्मा बाबा की पुत्रवधु दादी बृजइंद्रा जी और उनकी सुपुत्री दादी निर्मलशान्ता जी मुख्य होते परंतु उनको मुख्य संचालिका ना बनाते हुए बाबा ने योग्य व्यक्तियों को नियुक्त किया और परिणामस्वरूप ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद दादी और दीदी ने मिलकर बहुत ही सुचारु रूप से यज्ञ का कार्य संभाला जिस कारण आज हम इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का इतना विशाल वटवृक्ष देख रहे हैं। इस प्रकार स्वपसंद, लोकपसंद और प्रभुपसंद का अलिखित नियम या संविधान बना हुआ है। हमें अगर विश्व महाराजा विश्व महारानी बनना है तो इन तीनों कसौटियों पर खरा उतरना पड़ेगा तभी हम भविष्य का विश्व राज्यकारोबार सम्भाल सकेंगे। ये तीनों ही शब्द दैवी कारोबार सो विश्व राज्य कारोबार करने के लिए मापदण्ड हैं। ये मापदण्ड भारत के संविधान या चुनाव आयोग की आचारसंहिता के पास होते तो हमारे भारत में आपराधिक पृष्ठभूमि (criminal record) रखने वाले एम.पी. या एम.एल.ए. नहीं होते और भारत की राज्यव्यवस्था बहुत अच्छी होती।

आशा है आप सभी पाठकगण भी तीव्र पुरुषार्थ से इन तीनों सर्टिफिकेट्स को लेंगे और भविष्य विश्व महाराजा महारानी बनेंगे।

नोट:- आप सबके फोन तथा ई-मेल आदि आये और उसी अनुसार मैंने इस लेखमाला को लिखना शुरू किया है। ❖

अंदर जाने वाली 'सूचना' का महत्त्व

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुड़गाँव

हम हर कदम पर अपना भाग्य बना रहे हैं। इसका पहला साधन है 'सूचना'। सुबह उठते ही और रात को सोने से पहले 'सूचना' का हमें बहुत ध्यान रखना है। इसके लिए हम अपने पास कोई ऐसा साहित्य रखें जिसे रात को सोने से पहले और सुबह उठने के साथ ही पढ़ सकें जिससे हमारे संकल्प स्वच्छ रह सकें। ब्रह्माकुमारीज़ में हम परमात्मा के महावाक्य सुनते हैं। अक्सर लोग रात को सोते समय या तो टी.वी. देखते हैं और अगर पढ़ते भी हैं तो वो अच्छा साहित्य नहीं होता है। उसे पढ़ने से मन बहुत ही उत्तेजित हो जाता है, फिर उसी उत्तेजना में सो जाते हैं। शरीर तो सो गया लेकिन मन एक्टिव रहा, इस कारण जब सुबह उठते हैं तो मन की स्थिति भारी-भारी होती है।

दूसरा, अगर हम किसी बात से परेशान हैं, चेतन मन में कोई संकल्प चल रहा है, तो नींद नहीं आती है। सोने की कोशिश करते हैं लेकिन सो नहीं पाते हैं। रात में कौन सो नहीं पाता है? जिसका चेतन मन शांत नहीं होता है। दिन की घटित सारी घटनायें या परेशानियाँ, जो सोच के ऊपर हावी हो जाती हैं, मन में बार-बार उन्हीं के विचार आते रहते हैं। इस प्रकार के संकल्पों की गति बहुत तीव्र होती है और वे चेतन मन को शांत होने नहीं देते हैं जिसके कारण व्यक्ति को रात में नींद नहीं आती है। तब वे नींद की गोली लेंगे या कोई अन्य तरीका अपनाएंगे जो चेतन मन को शांत कर दे। ये सब करने की बजाय अगर हम सिर्फ कुछ अच्छा पढ़ें तो हमारी सोच का स्तर अपने-आप बदल जायेगा और मन धीरे-धीरे शांत होता जायेगा। ये हम सारे दिन में भी कर सकते हैं। जब बेकार के संकल्प की गति इतनी अधिक होती है कि बात मन में एकदम चलती ही जाती है तब हम खुद सकारात्मक संकल्प नहीं कर पाते हैं। ऐसे समय में कोई भी अच्छी किताब खोलें और उसे पढ़ना शुरू करें, इससे व्यर्थ संकल्प चलने बंद हो जायेंगे।

जो सूचना हमने सोने से पहले ली। सुबह उठेंगे तो उसी संकल्प के साथ उठेंगे। फिर हम ध्यान रखें कि सुबह उठते ही पहली चीज़ हम अंदर क्या डालते हैं? यह सुबह के नाश्ते के समान है। हमारा नाश्ता बहुत ही स्वास्थ्यवर्धक होना चाहिए। उसी प्रकार सकारात्मक संकल्प मन का भोजन हैं, इसलिए हमें बहुत ही शक्तिशाली संकल्प अपने मन के अंदर भरने चाहिएँ। इसे एक महीने के लिए आजमा कर देखें। एक महीने तक सुबह-सुबह उठकर समाचार-पत्र और रात को सोने से पहले टेलीविजन मत देखो। अगर समाचार-पत्र पढ़ना ही है तो उसे एक पत्र की तरह पढ़ो। ये नहीं कि सुबह 6.00 से 8.00 बजे के बीच में पेपर पढ़ने बैठ जायें। मैं ये नहीं कहती हूँ कि आप समाचार-पत्र नहीं पढ़ो, पढ़ो लेकिन थोड़ी देर के बाद और उसकी जगह आप कुछ ऐसा पढ़ो जिससे सकारात्मक सूचना अंदर भरती जाये। इतना-सा करने से आप देखेंगे कि आपको मेहनत कम करनी पड़ेगी और सफलता ज्यादा मिलेगी। प्रारंभ में भोजन ही अगर नकारात्मक विचारों वाला डालेंगे तो सकारात्मक विचार कहाँ से निर्मित होंगे! अगर हमने सुबह-सुबह अपने अंदर सकारात्मक विचार डाले कि मेरे साथ सब कुछ अच्छा ही हो रहा है, स्वयं परमात्मा और परमात्मा की शक्ति मेरे साथ है, इससे हम सारे दिन स्थिर रहेंगे और किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं होंगे। रात को घर में कोई समय से नहीं पहुँचा है तो भी हमारी सोच सकारात्मक होगी, कोई बात नहीं है, थोड़ी देर में आ जायेंगे, कुछ नहीं होगा।

अगर हमने सोचा कि कहीं दुर्घटना न हो गयी हो, पता नहीं क्या हो गया, अगर उनको कुछ हो गया तो हमारा घर कैसे चलेगा, मेरे जीवन का क्या होगा, बच्चों को मैं कैसे संभालूँगी, बस इतनी-सी देर में ही हमने इतने सारे नकारात्मक विचार निर्मित कर लिये। अब वो घर पर आयेंगे तो हम उनका स्वागत कैसे करेंगे? हमने इतनी देर जो-जो संकल्प किये, अचानक ही बाहर निकल आयेंगे। हम उस समय समझ नहीं पाते हैं कि सामने वाला व्यक्ति भी कुछ दृश्यों से गुजरा है, तभी वो लेट हुआ है। उस समय हम दोनों के बीच तुरंत झगड़ा होगा। यह मेरी शाम की कमाई (सोच) का फल है। ये दूरी किसने पैदा की, हम कहते हैं कि वो लेट थे लेकिन नहीं, मैंने जिस तरह के संकल्प कर उनका इंतजार किया, झगड़ा उसी के कारण हुआ। अब अगर हम उनका इस संकल्प के साथ इंतजार करते कि अभी तो थोड़ी देर में फोन आ ही जायेगा, पता चल जायेगा कि वो कहाँ हैं या फोन का संकेत पकड़ नहीं कर रहा होगा, कहीं किसी जरूरी काम से रुक गये होंगे आदि-आदि। अब जब वो व्यक्ति सामने पहुँचेगा तो हम उसके साथ कैसे मिलेंगे ...? एकदम सामान्य तरीके से मिलेंगे, झगड़ा नहीं करेंगे तो इससे एक अलग तरह का भाग्य तैयार होता है।

❖

बोलना सिखाया गूंगे को

ब्रह्माकुमार संदीप, लेक्चरर, बहादुरगढ़

मेरा जन्म सोनीपत के एक छोटे-से गाँव में हुआ। मेरा साधारण परिवार मेहनत-मजदूरी से चल रहा था। घर में न टी.वी. और न ही रेडियो आदि थे। इस कारण से, बाहर की दुनिया में क्या हो रहा है, उससे अनभिज्ञ ही रहे। पढ़ाई में मेहनत करके इंजिनियरिंग कॉलेज में दाखिल हो गया।

दोस्तों को नहीं सुहाती थी चुप्पी

कॉलेज में मेरे सब दोस्त नई-पुरानी फिल्मों की बातें करते, खेल-मनोरंजन पर चर्चा करते लेकिन मैं गूंगे की भांति सुनकर केवल समझने की कोशिश करता पर कुछ बोल नहीं पाता। ऐसे में मन सृजनात्मक होने की बजाय नकारात्मक होने लगा और कई विकारों ने आ घेरा।

जहाँ चाह वहाँ राह

बचपन से मन में चाहना थी कि कोई मुझे सकारात्मक शब्द जैसे प्रेम, पवित्रता, दया, करुणा आदि का यथार्थ (सही) मतलब समझाए पर चाहना पूरी नहीं हो पा रही थी। एक दिन मेरे एक मित्र ने मुझे ब्रह्माकुमारी आश्रम के बारे में बताया। मित्र तो मात्र निमित्त बना था, वास्तव में तो भगवान ने ही मुझे अपने आश्रम में बुलाया था। आश्रम पर पहले ही दिन के वार्तालाप ने मुझे रोमांचित कर दिया। नि:स्वार्थ प्यार क्या होता है उसका प्रैक्टिकल स्वरूप भी दिखा दिया।

भगवान ने खोले सकारात्मक शब्दों के भण्डार

इसके बाद प्रतिदिन आश्रम पर ज्ञान मुरली सुनने लगा तो पाया कि बुद्धिजीवियों के भी बुद्धिदाता, वरदाता, भाग्यविधाता ने मेरी भी बुद्धि के पट (दरवाजे), जिसमें 84 जन्मों के अनंत शब्दों के भण्डार भरे पड़े थे, खोल दिए और देखते ही देखते गूंगा बोलने लगा। न केवल बोलने लगा किन्तु भगवान के दिए श्रेष्ठ महावाक्यों से खुद का शृंगार करने और अनेक आत्माओं का शृंगार कराने लगा। मीठे बाबा, लाख-लाख शुक्रिया, जो आपने मुझ गूंगे को बोलना सिखा दिया। ज्ञानामृत का पान करने वाले आप सभी भाई-बहनों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि अगर आपके भी आस-पास कोई बच्चा बोलने से कतराता है तो नजदीकी ब्रह्माकुमारी आश्रम से नि:शुल्क राजयोग की शिक्षा दिलवाएँ और परमात्मा में विश्वास बनाए रखें। ❖

पुण्य तिथि पर विशेष...

त्याग, तपस्या और सेवा के वे साकार रूप थे

ब्रह्माकुमारी सुधा, रशिया

बात सन् 1968 की है, मेरी आयु साढ़े चौदह वर्ष थी। हमारी एक पड़ोसी माता पिछले 12 वर्षों से ब्रह्माकुमारी आश्रम में जा रही थी, उनकी हमारी लौकिक माताजी के साथ दोस्ती थी। दोस्ती का कारण भी बड़ा रुचिकर था। हमारे सभी पड़ासी घरों में प्याज का प्रयोग करते थे, हमारे घर में यह प्रयोग नहीं होता था इस कारण आश्रम में जाने वाली माताजी की, हमारी लौकिक माता से दोस्ती हुई और उन्हीं से हमारी माताजी को ज्ञान भी मिला। माताजी से ज्ञान हम बच्चों को मिला। हमने भी आश्रम पर जाना प्रारम्भ कर दिया।

जगदीश भाई जी के साथ सुधा बहन

जब मैं पहली बार कमला नगर सेवाकेन्द्र पर गई उस समय वहाँ दादी गुलजार, चक्रधारी बहन तथा जगदीश भाई जी थे। जब मैंने उन लोगों को देखा तो मुझे मेरा लक्ष्य स्पष्ट हो गया था कि मुझे अपना जीवन इन जैसा ही बनाना है। तब मैं स्कूल में पढ़ती थी और गर्मी की छुट्टियाँ चल रही थीं, उसी दौरान हम कुमारियों की सप्ताह में दो बार शाम को क्लास होती थी, उसी क्लास में हम आते थे।

खुशमिज़ाज

एक बार जब रक्षा बन्धन का पर्व आने वाला था, तब भ्राता जगदीश जी हम कुमारियों के पास एक गीत लेकर आए और कहने लगे, रक्षाबन्धन आने वाला है, क्या आप सार्वजनिक कार्यक्रम में यह गीत गा सकते हैं? गीत था, 'पवित्र बन, पवित्र बन माँ भारती पुकारती.....'। मैंने गीत देखा और कहा, हाँ, गा सकते हैं, इसे तो हम मार्चिंग सांग की तरह कर सकते हैं। उन्होंने पूछा, कैसे? फिर मैंने छोटी कुमारियों को लाइन में खड़ा करके रिहर्सल शुरू कर दी। इसके बाद वे रोज़ हमारी रिहर्सल के समय प्रेरणा देने आ जाते और हमारे साथ मार्चिंग में भी शामिल हो जाते। इस तरह मेरा उनसे परिचय और सम्बन्ध शुरू हुआ। मुझे लगा कि भाई साहब बहुत खुश मिज़ाज हैं।

संग से कई कलाएँ जीवन में आ गईं

कुछ दिनों बाद भाई साहब ने मेरी डायरी, जिसमें मुरली क्लास के नोट्स लिखे थे, देखी और पूछा, यदि मैं आपको कुछ लिखने या फेयर करने की सेवा दूँ तो करोगी? मैंने कहा, हाँ। फिर मैं उनकी लिखी विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु को फेयर करने लगी। फिर उन्होंने मुझे सीधा ही लिखाना शुरू कर दिया। इस प्रकार उनके अधिक समीप आ गई। जब यह लिखा हुआ मैटर छप कर आता था तो वे कहते थे, इसकी प्रूफ रीडिंग करो, तो प्रूफ रीडिंग भी सीख गई। दिल्ली में विभिन्न प्रकार की मीटिंग, कार्यक्रम होते थे, उनके लिए पत्र लिखने होते थे, वो मुझे विषयवस्तु बता देते थे, वो लिखकर, पते लिखकर पोस्ट करने की सेवा करनी सिखाई। अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-व्यवहार भी करना सिखाया। सन् 1981 में जब विश्व नव निर्माण मेला हुआ

था, उसके आयोजक जगदीश भाई थे। भाई साहब ने मुझे कहा, मेले के भाषणकर्त्ताओं के लेख, परिचय और फोटोज़ मंगवाओ, उन्हें सोविनियर के रूप में छपवाना है। इनको इकट्ठा करने के लिए कई-कई बार पत्र लिखने पड़ते थे। मैंने उनके साथ रहते, सेवा करते, हर कदम बहुत कुछ सीखा। उन्होंने सामने बैठकर मुझे कभी क्लास नहीं कराई, कभी भाषण करने के तरीके नहीं बताए पर संग में रहते-रहते अपने आप कई कलाएँ जीवन में आ गईं।

क्लास होती थी बड़ी विधिपूर्वक

एक बार दिल्ली में भट्ठियाँ हुई थीं। अधिकतर क्लासेज़ जगदीश भाई ही कराते थे। मैं देखती थी, उनकी क्लास बड़ी विधिपूर्वक होती थी। किसी विषय को लेकर, विस्तार करते हुए उसके अलग-अलग पहलुओं पर कई-कई प्वाइंट्स बता देते थे। एक बात का दूसरी बात से लिंक रहता था, मुझे उसमें बहुत रुचि थी। बहुत ध्यान से सुनती थी। मुझे महसूस होता है, उनकी वो विधि मेरी भी बुद्धि में बड़ी सहजता से और स्वाभाविक रूप से प्रिंट हो गई है क्योंकि जब कहीं क्लासिज कराती हूँ तो भाई-बहनें मुझे बताते हैं कि आप पर उनके स्टाइल का प्रभाव है।

रूहों को परखने की शक्ति

नियमितता (Regularity) और समयबद्धता (Punctuality) उनमें बहुत थी। ऐसे नहीं कि 5 बजे कहा, तो 5 बजे घर से निकलेंगे, नहीं, वे 5 बजने में 2 मिनट पहले निर्धारित स्थान पर पहुँच जाते थे, बहुत पहले भी नहीं। मैंने भी उनसे यही सीखा है, कोई मेरे लिए इन्तजार क्यों करे? जैसे बाबा बच्चों की विशेषताओं को परखकर उसी अनुसार कार्य देते थे, जगदीश भाई में भी रूहों की विशेषताएँ परखने का बड़ा विशेष गुण था। रूहों की विशेषताओं को बाबा की सेवा में प्रयोग करते थे। उन्होंने हर ब्रह्माकुमारी-कुमार बहन-भाई के जीवन की कीमत को समझा। जब वे देखते थे, अमुक बहन में विशेषता है तो दादी जी के पास उसे लेकर जाते थे कि यह विदेश सेवा में भेजी जाने योग्य है। वे सोचते थे कि यदि कोई प्रतिभाशाली है तो उसे मौका मिलना चाहिए प्रतिभा द्वारा सेवा करने का। हरेक को आगे बढ़ाने का उन्हें बहुत सरोकार था। जब तबीयत थोड़ी बिगड़ी तो उन्होंने मंच पर जाना छोड़ दिया और दूसरों को आगे कर दिया। विंग्स बनाकर अलग-अलग निमित्त आत्माओं को उनकी बागडोर सौंपकर न्यारे हो गए।

रहम और करुणा की भावना

पहले तो अपने लिए गाड़ी लेना स्वीकार नहीं किया था, बाद में मान गए थे पर सफर करते समय यदि कोई रास्ते में खड़ा होता था तो उसे गाड़ी में साथ बैठा लेते थे। उनके दिल में रहम, करुणा की भावना बहुत थी, अपने लिए सुख लेने का संकल्प नहीं था। उनका एक ही कमरा था जिसमें सोने का, रहने का, मिलने का, लिखने का – सभी कार्य वे करते थे। उस कमरे में टेबल-कुर्सी भी नहीं थे। अपने बेड पर, पीछे तकिया लगाकर और लकड़ी के बने आधार पर कागज रख वे लिखते रहते थे। हम कभी-कभी कहते थे, भाई साहब, एक टेबल-कुर्सी आपके लिए लगा दें, कहते थे, अपने लिए करो, मुझे नहीं चाहिएँ।

खाना बहुत सादा खाते थे, अचार-पापड़ का प्रयोग नहीं करते थे, कहते थे, यह सात्विक भोजन नहीं है। सादगी थी, बेहद की दृष्टि थी। ढाई बजे उठते थे। अमृतवेला करके, फिर साढ़े तीन बजे नीचे हॉल में आते थे, हम में से हरेक को बारी-बारी मंच पर बिठाकर योग कराने की सेवा देते थे। अमृतवेले के बाद चाय लेते थे, मुरली कमरे में ही पढ़ते या सुनते थे। दोपहर में आधा घण्टा आराम करके फिर अपने कार्य में लग जाते थे। रात को 10 या 11 बजे तक सो जाते थे। इस प्रकार अथक कर्मयोगी थे। सादगी, सेवा, तपस्या के साकार रूप थे। उन्होंने बाबा-मम्मा को एक्यूरेट फॉलो किया। आज भी कदम-कदम पर उनकी शिक्षाएँ हमारा मार्गदर्शन करती हैं। ❖

स्वयं की तलाश

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

एक पौराणिक कथा है कि एक राजा को वैराग्य आया, उन्होंने राज्य का त्याग कर दिया, गेरुए वस्त्र धारण कर लिए और कमण्डल लेकर भिक्षा माँगने निकल पड़े। शाम होने पर कीर्तन करते, जप करते, हवन में भाग लेते पर मन को शान्ति न मिली। आखिरकार राजा अपने गुरु के पास पहुँचे और अपनी समस्या सुनाई। गुरु जी ने गम्भीर होकर पूछा, जब आप राजा थे तब अपने बगीचे का निरीक्षण करने जाते थे, तो माली को क्या सावधानियाँ देते थे? गेरु वस्त्रधारी राजा ने कहा, यूँ तो कई प्रकार की सावधानियाँ देता था पर सबसे ज्यादा ज़ोर बीजों की उत्तम श्रेणी और जड़ों की सही देख-भाल के बारे में देता था, इसके बिना पौधा या तो सूख जाता है या ठीक से वृद्धि को नहीं पाता। गुरुजी ने कहा, गेरुए वस्त्र, कमण्डल, कीर्तन, जप, हवन – ये सभी मानो तना, पत्ते, फूल हैं परन्तु बीज और जड़े हैं आत्मा और आत्मा में उठने वाले विचार। जब तक आत्मा को न जाना जाए, उसके विचारों को सतोगुणी न बनाया जाए तब तक शान्ति मिल नहीं सकती।

आत्मा है कालातीत

क्या हम आत्मा के स्वरूप को जानते हैं? क्या हमने आत्मानन्द की अनुभूति की है? शरीर मरणधर्मा है अर्थात् शरीर का धर्म है मरना। यह अपने धर्म को जन्मते ही निभाना शुरू कर देता है। जन्म के साथ ही यह पल-पल मृत्यु की ओर बढ़ना शुरू कर देता है और बढ़ते-बढ़ते मृत्यु के आगोश में समा जाता है। दूसरी तरफ आत्मा अविनाशी है, मरणधर्मा शरीर में रहते भी कालातीत। शरीर कालाधीन है और आत्मा कालातीत। जैसे सूर्य का उदय और अस्त व्यवहार में तो दिखाई देता है परन्तु वास्तव में वह न उदय हुआ न अस्त। सूर्य तो सदैव है। भारत में उदय होता है तो अमेरिका में अस्त। इसी तरह जीवन और मृत्यु व्यवहार के दो रूप लगते हैं लेकिन आत्मा तो सदा है जो एक जगह जीव (शरीर) को छोड़ती है और फिर कहीं और नए जीव (शरीर) को ले रही होती है। इसलिए किसी ने सत्य ही कहा है, मृत्यु कोई बाहरी घटना नहीं है। ऐसा नहीं है कि कोई यमदूत आता है और प्राणों को खींच ले जाता है। मृत्यु हमारे भीतर ही घटित होने वाली एक आन्तरिक घटना है।

मालूम कीजिए सही और स्थाई पता

स्वामी विवेकानन्द से एक बार एक व्यक्ति ने प्रार्थना की कि मुझे जल्दी से जल्दी ईश्वर से मिला दीजिए। स्वामी जी ने कहा, मैं आपकी इच्छा उन तक पहुँचा दूँगा, आप अपना पूरा नाम, पता, व्यवसाय आदि लिखकर दे दें, उत्तर आपको घर बैठे मिल जाएगा। उस व्यक्ति ने तुरन्त अपना डाक का पता लिखकर दे दिया। स्वामी जी ने गम्भीर होकर पूछा, यह तुम्हारा सही और स्थाई पता है क्या? उस व्यक्ति ने थोड़ा असमंजस से जवाब दिया, स्थाई है या अस्थाई, सही है या गलत, यह तो मैं नही जानता पर पत्र-व्यवहार इसी से करता हूँ। स्वामी जी ने स्नेहपूर्वक कहा, पत्र-व्यवहार का नहीं, सही और स्थाई पता मालूम करो। पहले स्वयं को तलाशो, स्वयं के सत्य और स्थाई रूप से मिलो, फिर ईश्वर से भी मिलन अवश्य हो जाएगा।

आवरणों को जानना ज्ञान नहीं है

स्वामी विवेकानन्द ने आत्मा के सत्य और स्थाई पते की ओर इशारा किया। शरीर रचना है, आत्मा रचता है। रचता और रचना का मिला-जुला रूप है यह मानव जीवन। दोनों मिल-जुल कर जीवन का संचालन करते हैं। आत्मा संचालक है और शरीर चलता है पर दोनों के घनिष्ठ मेल का परिणाम यह निकलता है कि चलते-चलते आत्मा अपने श्रेष्ठ रूप, गुण, कर्त्तव्य को भूलकर अपने को शरीर समझने लगती है और शरीर की सारी कमजोरियों को भी अपनाने लगती है। श्रीरामकृष्ण ने बहुत अच्छा उदाहरण दिया है, एक प्याज ले लो, उसे छीलते जाओ। अन्त में उस प्याज में कुछ नहीं बचता है। उसी प्रकार मैं एक साधु हूँ, पिता हूँ, बहन हूँ, पत्नी हूँ, भाभी हूँ, धनी-गरीब हूँ ये केवल आवरण

हैं। आवरणों को जान लेना ज्ञान नहीं है। ज्ञानी वह है, जो आवरण को हटाकर उसके बदले, मैं आत्मा हूँ, ऐसा जान लेता है, मैं चैतन्य हूँ, ऐसा अनुभव कर लेता है। आत्म स्वरूप को अनुभव करने वाला व्यक्ति किसी वस्तु में आसक्त नहीं होता।

आत्म साक्षात्कार

रमण नाम के एक महर्षि हुए हैं। बचपन में ही उनके पिताजी गुजर गए। घर के लोग रोने लगे और बोले, बेटा, पिताजी चले गए। पिताजी का शरीर तो घर में ही था। रमण सोच में पड़ गया, लोग कह रहे हैं, पिताजी गए पर पिताजी का शरीर यहाँ उपस्थित है, शरीर में हाथ, पैर, नाक, कान, आँख – सब अंग सुरक्षित हैं, फिर गया कौन? अवश्य ही जाने वाला और यह शरीर अलग-अलग हैं, इस बात का पता लगाना चाहिए। इसी जानकारी को पाने के लिए वो घर से निकल गया। एक रात मन्दिर में सोते हुए ढेर चींटियों ने उन्हें काटा, खून निकलने लगा, जागने पर उन्होंने अपने से सवाल पूछा, क्या यह खून मुझसे निकल रहा है? उत्तर आया, नहीं। उन्हें महसूस हो गया, मैं अलग हूँ, शरीर अलग है। इसी अनुभव का नाम आत्म-साक्षात्कार और आत्मानुभूति है, इसी के आधार पर बालक रमण महर्षि बन गए।

हम भी विचार करें, हम कौन हैं? जैसे गहना और डिब्बा अलग-अलग हैं, मोती और सीप अलग-अलग हैं उसी प्रकार आत्मा और शरीर भी अलग-अलग हैं। दोनों में से कीमत किसकी अधिक है? यदि कोई डिब्बा सम्भाले, गहना फेंक दे, कोई सीप को सम्भाले, मोती को फेंक दे तो हम उसे क्या समझेंगे? समझदार समझेंगे? नहीं ना। हम भी यदि दिन-रात शरीर, शरीर के पदार्थ, शरीर के सम्बन्ध – इन्हीं में उलझे रहें तो क्या हासिल कर पाएँगे, उन्नति कैसे होगी? इन्द्रियों पर नियंत्रण कैसे होगा? आत्मस्वरूप को जान लेने और अनुभव कर लेने के बाद ही क्रोध पर जीत होती है, भोगों से अनासक्ति होती है, काम, लोभ, ईर्ष्या से मुक्ति होती है। वर्तमान काल की सभी समस्याओं का कारण है, आत्मा के ज्ञान को उपेक्षित करना और देहअभिमान वश विकारों में फँसे रहना।

स्वतन्त्र है आत्मा

मान लीजिए किसी सभागार में कई लोग बैठे हैं। अचानक शोर मचता है कि आग लग गई है, भागो, भागो। शोर होते ही सभागार में बैठे सभी व्यक्ति दरवाजों से जल्दी-जल्दी बाहर निकल जाएंगे। उसी कमरे में रखे हुए कुर्सी, मेज, दीवान, सजावट का सामान आदि इस आवाज को न तो सुनेंगे, ना कोई प्रतिक्रिया करेंगे क्योंकि वे सब सामान भी जड़ कमरे का ही जड़ हिस्सा हैं। चेतन तो मनुष्य थे जो आवाज सुनकर बाहर निकल भागे। इसी प्रकार, इस शरीर के सामने भी जब कोई बड़ी चुनौती आती है, कोई भयंकर दुर्घटना घटने वाली होती है या इससे अलग होने का समय आ गया है तो इसमें विराजमान आत्मा इसे छोड़कर भाग जाती है। यूँ तो शरीर के अन्दर और बाहर कई छोटे-बड़े अंग हैं, इसकी इन्द्रियाँ हैं पर वे अपने स्थान से नहीं हिलते क्योंकि वे जड़ शरीर के जड़ अंग हैं। कोई बाहरी शक्ति भले ही उन्हें शरीर से अलग करे पर वो स्वत: अलग नहीं हो सकते परन्तु आत्मा शरीर का अंग नहीं है, इसे शरीर से अलग होने के लिए किसी बाह्य शक्ति की जरूरत नहीं। वह अपने आप इसमें प्रवेश करती है और समय आने पर या अकाल दुर्घटना घटने पर अपने आप इससे न्यारी भी हो जाती है। अत: आत्मा स्वतन्त्र है, प्रकृति से भिन्न है और प्रकृति के बने शरीर को चलाने वाली है।

भूसे में लिपटने और अलग होने की कहानी

आत्मा बीज है। संसार में जितने भी प्रकार के बीज हैं, किसी न किसी आवरण में लिपटे होते हैं। पुन: उगाने के लिए उन्हें आवरण (भूसे) से अलग करना पड़ता है। इसी प्रकार यह शरीर भी मानो भूसा है और आत्मा इस भूसे के बीच बीज की तरह है। परमात्मा पिता किसान की तरह हैं जिनकी नजर आत्मा पर है। वे, शरीर से हिसाब चुक्ता होते ही आत्मा रूपी दाने को घर ले जाएंगे और शरीर रूपी भूसे को या तो जला दिया जाएगा या दबा दिया जाएगा। परमात्मा हम आत्मा रूपी बीजों को नए कल्प की नई जमीन पर फिर जन्म देंगे मानो पुन: बो देंगे। इस प्रकार शरीर रूपी भूसे में लिपटने और उससे अलग होने की यह कहानी जन्म-जन्मान्तर चलती रहती है।

रक्षक है भगवान

ब्रह्माकुमार विपिन, वाराणसी

घटना आज से करीब 9 वर्ष पहले की है। मैं और मेरे लौकिक बड़े भाई (पाँच भाइयों में चौथे भाई और मैं पाँचवाँ) कुछ आवश्यक कार्यों के लिए वाराणसी से बाहर गये हुए थे। कार्य पूरा करके हम बस से एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर जा रहे थे। बस अभी थोड़ी ही दूर पहुँची थी कि उसमें कुछ आवाज़-सी आने लगी। हमने कण्डक्टर से कहा कि भाई, यह क्या हो रहा है? ड्राईवर ने थोड़ी दूर आगे जाकर बस को खड़ा किया और उतरकर देखने के बाद बस को पुनः आगे बढ़ाया। हम लोगों के मन में हल्की-सी बेचैनी या कहें सवाल-सा पैदा हो रहा था। कण्डक्टर ने कहा, सर, कुछ हुआ नहीं है, कभी-कभी थोड़ा ब्रेक रगड़ रहा है। बस को करीब 300 किलोमीटर की दूरी पार करनी थी। हमने कहा, लम्बी दूरी की बस है, आपको पूरा ख्याल रखना चाहिए। कोई दिक्कत न होने की बात कहते हुए वह बस को आगे बढ़ाता रहा। हम लोग भी प्यारे बाबा की याद में बैठे रहे।

चारों ओर घोर अंधेरा

करीब 25 कि.मी.आगे जाने के बाद बायीं तरफ जाती बस तेजी से दायीं ओर मुड़ने लगी। जब तक कि हम कुछ सोच-समझ सकें, बस कई चक्कर खाते हुए तेजी से एक खाई में जाकर पलट गई। कुछ देर के पश्चात् जब थोड़ा सम्भलने का अवसर मिला तो मैंने देखा कि चारों ओर घोर अंधेरा छाया हुआ है। तभी बस के यात्रियों के चिल्लाने एवं एक-दूसरे को पुकारने की आवाजें सुनाई देने लगीं। मेरे पास बस की खिड़की थी जहाँ से थोड़ी रोशनी अंदर आ रही थी। मुझे लगा कि अब इसी खिड़की के रास्ते मुझे बाहर निकलना होगा।

पूछी एक-दूसरे की कुशल-क्षेम

जब यह ख्याल आया कि खिड़की से बाहर निकलना चाहिए, तभी अचानक मुझे भैया की याद आई और मैंने ज़ोर-ज़ोर से उन्हें आवाज दी। कई बार आवाज देने के बाद भैया की आवाज सुनाई दी। वे भी मुझे आवाज दे रहे थे। हम लोगों ने एक-दूसरे की आवाज सुनी, कुशल-क्षेम पूछी और समझ गए कि हम दोनों को प्यारे बाबा ने सुरक्षित रखा हुआ है। फिर मैंने कहा, भैया, मैं खिड़की से बाहर निकलने जा रहा हूँ, आप भी निकलिए।

भयंकर और दर्दनाक दृश्य

मैं बस की सीट और लोगों से दबा हुआ था। कुछ देर के प्रयास के बाद खिड़की से बाहर निकलने में सफल रहा। बाहर आकर देखा कि बस बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुकी है। रास्ते से सौ फीट की दूरी पर करीब 15 फीट नीचे आकर बस पलट गई थी। बस के पहिये ऊपर और छत नीचे थी। इतने में ही भैया निकलकर मेरे पास आ गए। हम दोनों बहुत ही आश्चर्य से बस को देख रहे थे। यात्रियों में से किसी का हाथ तो किसी का पैर फ्रैक्चर था। किसी का सिर फटा हुआ होने से खून बह रहा था, किसी के शरीर के अलग-अलग हिस्सों में गम्भीर चोटें थी। ऐसे समय में प्यारे बाबा ने हम दोनों के अंदर ऐसी शक्ति भर दी कि हम बिना किसी भय के तुरन्त घायल आत्माओं की सेवा में लग गए। हम दोनों ने कई यात्रियों को बस से निकालकर रोड तक पहुँचाया। नेशनल हाईवे होने के कारण तब तक कई बस एवं छोटी गाड़ियों के लोग अपनी-अपनी गाड़ियाँ खड़ी करके हम लोगों के साथ घायलों की सेवा में लग गए थे। घायलों को बस एवं अन्य साधनों द्वारा नजदीक के हॉस्पिटल में भेजने का क्रम शुरू हुआ। लोगों ने बहुत ही तत्परता के साथ एक-दूसरे की मदद की। बस के अगल-बगल शवों की तरह पड़े हुए लोगों को हमने छू-छूकर देखा, धूल-मिट्टी से भरे हुए और कपड़े

भी फटे हुए होने के कारण उन्हें पहचानना मुश्किल हो रहा था। जिस खिड़की से मैं निकला था उसके ठीक नीचे भी एक-दो लोग दबे हुए थे। दो हाथ उस खिड़की के नीचे बस की छत से बाहर निकले हुए दिखाई दे रहे थे। बगल में ही किसी का पैर तो किसी की अंतड़ी फटकर बाहर निकली हुई दिखाई दे रही थी। मेरे जीवन का यह पहला बड़ा ही भयानक एवं दर्दनाक दृश्य था।

काम आएगा अशरीरी-पन का अभ्यास

मुझे प्यारे बापदादा की बहुत तीव्र याद आ रही थी और बाबा का अचानक और एवररेडी वाला महावाक्य कानों में गूँज रहा था। बाबा ने कहा है, 'बच्चे, अन्तकाल में ऐसे भयानक दृश्य सामने आयेंगे, खून की नदी बहेगी, लाशों का अम्बार लगेगा, भयंकर गृहयुद्ध मचेगा। ऐसे समय में आप बच्चों का बहुत काल का अशरीरी-पन का अभ्यास ही काम आयेगा।'

बचाया भगवान ने

मेरे अंदर एक नयी शक्ति का संचार हुआ। तभी कुछ लोग जो मदद में लगे हुए थे, हमारे समीप आए और हमारा हुलिया देखकर पूछने लगे, अरे, आप लोग कहाँ थे? कहाँ जाना है आप लोगों को? हमने बताया कि हम इसी बस में थे। हमारी बात पर उनको विश्वास नहीं हो रहा था। वे कहने लगे, अरे! आप इसी बस में थे? आप लोगों को कुछ नहीं हुआ? आप लोग तो घायलों की मदद में लगे हुए हो! वास्तव में उस बस में हमारे होने के प्रमाण स्वरूप हमारे पास धूल और मिट्टी से भरे हुए कपड़ों के अलावा और कुछ नहीं था। हमने बताया कि हम इसी बस से किसी तरह निकलकर मदद में लगे हुए हैं। यह सुनते ही उन लोगों के मुख से अनायास ही निकला कि अरे वाह! कमाल है! आप लोगों को तो भगवान ने बचाया। आप लोगों का तो भगवान ही रक्षक है!

रोम-रोम पुलकित हो उठा

इतना सुनते ही हमारे दिल से यही आवाज निकली कि वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! आज आपने हमारी परीक्षा भी ले ली और इतनी सहज पार भी करा दी। बाबा, आपने परीक्षा को सेवा का साधन भी बना दिया। लोग अनायास ही कहने को मजबूर हुए हैं कि आपका तो भगवान ही रक्षक है। मेरे दिल से आवाज आने लगी कि यह जीवन, जो भगवान की सेवा में अर्पित है, इसका कोई कैसे बाल बाँका कर सकता है! जिसने भगवान को ही अपना सच्चा पालनहार स्वीकार कर लिया उसके जीवन की डोर उस प्रभु पिता के हाथों में ही तो रहेगी न! धन्य है यह जीवन! मेरा तो रोम-रोम ही पुलकित हो उठा करुणानिधान की करुणा से।

अनवरत बाबा... बाबा और बाबा

इस घटनाक्रम का बिल्कुल न्यारा, प्यारा और निराला अनुभव जो कि आज तक मुझे प्रेरित करता रहता है और सदाकाल प्रेरित करता रहेगा, यह है कि जब बस अचानक तिरछी होते हुए मुड़ गई थी तो मेरे मुख से अनायास ही बाबा...बाबा शब्द निकलने लगा था। बाद में ऐसा आभास हो रहा था कि मैं एक बहुत छोटा, नन्हा-सा बच्चा हूँ और कोई मुझे अपनी गोदी में लेकर बाजोली के खेल की तरह उलट-पलट रहा है। इस प्रकार प्यारे बापदादा विकट परिस्थितियों के बीच अपने बच्चों की पूरी सम्भाल करते हैं। यह एक चमत्कार था, जादूगर की जादूगरी थी, खुदादोस्त की दोस्ती थी, पालनहार की पालना थी, तो रक्षक भगवान की ओर से की गई रक्षा थी। बस के पलटने के समय से लेकर बस से बाहर निकलने की अवधि तक मेरे मन से अनवरत रूप में बाबा....बाबा और बाबा शब्द ही निकल रहे थे।

इस घटना से प्यारे बापदादा ने हमें यह शिक्षा भी दी कि बच्चे अचानक और एवररेडी का पाठ सदा पक्का रखो। सृष्टि के विनाश की न सोचो परन्तु अपने अन्तिम श्वास की सोचो और एक बल, एक भरोसे पर अडिग रह, ड्रामा में आने वाले अचानक के दृश्यों के प्रति सजग व तैयार रहो। अपने चेकर और मेकर बनो। इस घटना ने मुझे स्वयं की चेकिंग का अवसर प्रदान किया कि मैंने पुरुषार्थ से आईवेल के लिए कितना बल जमा किया है । अपने पुरुषार्थ को चेक कर आगे बढ़ने हेतु और अधिक मेहनत की जरूरत का आभास भी हुआ। अन्त में दिल की इसी आवाज के साथ प्यारे प्रभु पिता का शुक्रिया करना चाहूँगा कि हम बच्चों के सदा सर्वदा के लिए रक्षक हैं आप। ❖

गतांक से आगे ...

मानव जीवन में धन की उपयोगिता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

धन का संचय करने का अर्थ है भविष्य के प्रति धनाभाव का संशय या डर। पृथ्वी का सबसे शक्तिशाली प्राणी मनुष्य, सबसे संशयग्रस्त व डरपोक प्राणी भी है, जो कि उसकी धन-संचय की वृत्ति से स्पष्ट दिखता है। जो मनुष्य धन के पीछे भाग रहा है वह ईश्वरीय ज्ञान को अनुभव में नहीं पा सकता। पक्षियों में संचय की वृत्ति बिल्कुल नहीं होती और आज तक किसी पक्षी को भूखे मरते नहीं देखा गया है। यहां तक कि बुढ़ापे की वजह से कोई पक्षी पंख हिला कर उड़ नहीं पा रहा हो, ऐसा भी देखने में नहीं आता। अन्य पशु भी संचय नहीं करते। यह एक कुदरती विधान है कि जो भी प्राणी अपने भविष्य को ईश्वर व कुदरत के हवाले करते हुए निष्काम कर्म करता है, उसके भविष्य की आवश्यकताएं ईश्वर व कुदरत स्वयं पूरा करते हैं परन्तु कलियुग में भविष्य के प्रति मनुष्य को ईश्वर पर भी भरोसा नहीं। हाँ, कुछ साधु, तपस्वी या फकीर इसका अपवाद हैं।

आध्यात्मिक सम्पदा के सामने नतमस्तक स्थूल सम्पदा

हजरत निजामुद्दीन अपने समय के महान फकीर थे। एक बार एक बेहद गरीब व्यक्ति आया और आँसू बहाते हुए बोला कि धन ना होने के कारण मैं अपनी बेटी की शादी नहीं कर पा रहा हूँ। निजामुद्दीन तो खुद फकीर थे अत: पैसे से मदद करना संभव नहीं था। उन्होंने अपनी जूतियां उतार कर उसे देते हुए कहा, 'तू इन्हें ले जा, तेरा काम हो जायेगा।' वह अनुयायी श्रद्धा से जूतियां सिर पर रख कर चल पड़ा। अमीर खुसरो भी उसी रास्ते पर अपने ऊंटों के काफिले के साथ आ रहा था। वह अपने समय का सबसे बड़ा अमीर व हजरत निजामुद्दीन का अनन्य अनुयायी था। उसने रास्ते में जब उस गरीब को देखा तो सिर पर रखी जूतियां पहचान गया कि ये मेरे गुरु की हैं। खुसरो ने उस व्यक्ति से पूछा कि तेरे पास ये जूतियां कैसे आईं तो उस व्यक्ति ने सारा किस्सा बता दिया। खुसरो ने कहा कि ये जूतियां तू मुझे बेच दे परन्तु उस गरीब ने मना कर दिया। इस पर खुसरो ने हीरे-जवाहरातों से लदे अपने सभी सात ऊंट देने की पेशकश की और सौदा पट गया। खुसरो ने अपने गुरु के पास जा कर जब उन्हें जूतियां पहनाईं तो गुरु ने पूछा, ''कितने में सौदा किया?'' खुसरो बोला, ''जायदाद से लदे सात ऊंट।'' कहा जाता है कि हजरत निजामुद्दीन ने कभी किसी को अपना शागिर्द नहीं बनाया परन्तु खुसरो को शागिर्द स्वीकार किया। बाद में गुरु और चेले की कब्रें भी अगल-बगल बनायी गईं। आध्यात्मिक सम्पदा के सामने स्थूल सम्पदा का नतमस्तक होना, उसकी यह एक मिसाल है।

संसाधनों की विसंगति

विश्व में गरीबी एक गंभीर समस्या है जिसका कारण है 10 प्रतिशत लोगों के पास 80 प्रतिशत संसाधनों (Resources) का होना और 80 प्रतिशत लोगों के पास 10 प्रतिशत संसाधनों का होना। बचे 10 प्रतिशत लोगों को अपने हिस्से के न्यायसंगत 10 प्रतिशत संसाधन प्राप्त हैं। संसाधनों की ऐसी विसंगति सतयुग व त्रेतायुग में नहीं थी। धन की बदौलत पूंजीपति, सरकार पर अपना प्रभाव बनाए रखते हैं और सरकार उनकी पूंजी को देश के विकास में लगाने के लिए कोई बड़ा निर्णय ले नहीं पाती है। एक बार फ्रांस के भाग्यविधाता नेपोलियन बोनापार्ट के सम्मान में एक समारोह हुआ था। नेपोलियन ने देखा कि दर्शकों में

एक औरत ने अपने को हीरे-जवाहरातों व आभूषणों से मानो लाद रखा था। नेपोलियन ने अपने सहायक से पूछा कि सामने बैठी औरत का पति क्या करता है? सहायक ने पता लगा कर बतलाया, ''इसका पति तंबाकू का बड़ा व्यापारी है।'' अगले दिन ही नेपोलियन ने एक बड़ा निर्णय लिया और तंबाकू के व्यापार का राष्ट्रीयकरण कर दिया परन्तु ऐसे भी धनाढ्य हुए हैं जिन्होंने सादा जीवन जीया और अपनी मेहनत से बहुत धन कमाया जिसे जरूरतमंदों की मदद में भी लगाया। जॉन डी. रॉकफेलर विश्व के बड़े उद्योगपतियों में से एक थे। वे बेहद रहमदिल व दानी प्रवृत्ति के थे। एक बार वे एक इंस्टीट्यूट में गए तो वहां क्लास में 'व्यापार-व्यवसाय' के संबंध में पढ़ाया जा रहा था। राकफेलर ने एक छात्र से पूछा कि बताओ प्रामिसरी नोट कैसे लिखा जाता है? छात्र ने ब्लैकबोर्ड पर लिखा, ''मैं इस इंस्टीट्यूट को दस हजार डॉलर देने का वायदा करता हूँ, हस्ताक्षर जॉन डी. राकफेलर।'' छात्र की कुशाग्र बुद्धि से राकफेलर खुश हो गए और फौरन इंस्टीट्यूट के नाम दस हजार डॉलर का चेक काट दिया।

भले आओ पर काम में लग जाओ

साधु-सन्तों व धर्मग्रन्थों ने धन को माया-ठगिनी कहा है और माया को मोक्ष प्राप्ति की सबसे बड़ी रुकावट माना है। धन को माया बताने वाले साधु-सन्त पहले धर्म के रक्षक हुआ करते थे, फिर रखवाले हो गये परन्तु अब ज्यादातर हो गए हैं ठेकेदार, जिन पर आज माया भारी पड़ रही है। वैभव व सुविधाओं के सुनहरे आवरण ने अच्छे-अच्छे तपस्वियों व पुरुषार्थियों को भी सम्मोहित कर दिया है। इससे उनके तपस्वी-रूप के सच का अनावरण हो जाता है। स्थूल-धन या आत्मिक-धन, इनमें से किसी एक का ही वरण किया जा सकता है। उसी अनुसार या तो इंद्रिय-सुख लिया जा सकता है या अतीन्द्रिय-सुख परन्तु आज के योगी या आध्यात्मिक मार्ग के राही, दो विपरीत अनुभव एक साथ लेना चाहते हैं, जो कि मिल न सकें। इंद्रियजीत व मायाजीत बन कर ही अलौकिक सुख का अनुभव हो सकता है। अतिरिक्त धन को ईश्वरीय सेवा में लगाना ईश्वरीय स्मृति में टिकने का उपाय है, जो फिर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराता है। एक सवाल अक्सर पूछा जाता है कि ब्रह्माकुमारी संस्था के इतने खर्चे कैसे पूरे होते हैं या इनके सेवाकेन्द्र इतने अनुशासित व संपन्न कैसे हैं? बात सीधी-सी है कि धन रूपी माया आती है ब्रह्माकुमारियों पर प्रभुत्व जमाने परन्तु उसे फौरन अनुशासन समझा कर सेवा कार्य में लगा दिया जाता है। ऐसे में माया मौसी भीगी बिल्ली बन कर दुम हिलाती रह जाती है। वह कहती है, ''मैं आऊं (म्याऊं)'' और ब्रह्माकुमारियां कहती हैं ''भले आओ, पर काम में लग जाओ।'' बात समझने की है कि जिन ब्रह्माकुमारियों ने अपना जीवन ही ईश्वरीय कार्य में समर्पित कर दिया, उनके पास जो भी 'जड़' या 'चैतन्य' आयेगा, उसे भी ईश्वरीय कार्य में ही लगना होगा। रावण व माया आते हैं ब्रह्माकुमारियों को सम्मोहित करने परन्तु लग जाना पड़ता है उन्हें प्रभु-कार्य में। रावण जैसा दंभ भरने वाला जिज्ञासु भी ज्ञान-अमृत पा कर ईश्वरीय सेवा में लग पड़ता है।

(क्रमशः)

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान। मोबाइल: 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 वेबसाइट: www.ghrc-abu.com

फैक्स: (02974) 238570 ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

कोमल है कमजोर नहीं, शक्ति का नाम है नारी

ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेण्टल हैल्थ में मन्दबुद्धि बच्चों का पोषण होता है। इसमें ऐसी ही बालिकाओं की एक दौड़ प्रतियोगिता हुई जिसमें दौड़ने वाली बेटियों में से एक बेटी थोड़ी दूर दौड़ने के बाद गिर पड़ी, रोने लगी। बाकी बेटियों ने जब सुना तो सभी रुक गईं और उसके पास दौड़कर आईं, उसे उठाया, साफ किया और हाथों में हाथ लिये साथ-साथ दौड़ने लगीं, एक साथ अन्तिम निशान पर पहुँचीं। जिसने भी देखा, तारीफ करने से न रह सका। इन बच्चियों के स्थान पर कोई बुद्धिमान समझा जाने वाला होता तो क्या करता? दौड़ सबसे पहले पूरी करने की कोशिश करता। विचार करें, मंदबुद्धि कौन? दूसरों की अनदेखी करने वाला या दूसरों को साथ लेकर चलने वाला?

बेटी न चाहने के कारण

यह विडम्बना नहीं तो और क्या है कि जिस देश में देवी स्वरूप की दो नवरात्रियों में धूमधाम से पूजा होती है, उसी देश में सरकार को 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का राष्ट्रीय कार्यक्रम चलाने की घोषणा करनी पड़ रही है। आखिर सामान्यजन बेटी क्यों नहीं चाहते? क्या बेटे द्वारा अन्तिम संस्कार करने से ही मुक्ति मिलेगी? क्या आज हर बेटा श्रवण कुमार बनकर अपने माता-पिता की संभाल कर रहा है? बेटी न चाहने के कारणों में यही प्रमुख कारण सामने आते हैं - 1. बेटी दूसरे घर चली जायेगी। 2. समाज में चरित्र का दिवाला निकल गया है, छोटी बच्ची से लेकर बुजुर्ग महिला भी आज सुरक्षित नहीं है, बेटी कैसे सुरक्षित रह पायेगी। सभी इन्दिरा गाँधी, किरण बेदी तो नहीं बन सकती। 3. दहेज का दानव आज भी मुँह खोले खड़ा है। आइये, इन कारणों पर विचार करें –

1.बेटी दूसरे घर चली जायेगी –

जो कार्य पुत्र नहीं कर सके वे कार्य पुत्रियों ने कर दिखाये हैं। बहुत लोगों के जीवन में देखने में आता है कि पुत्र छोड़ कर चला गया और पुत्रियों ने वृद्ध माता-पिता की संभाल की। कौन-सा ऐसा क्षेत्र बच गया है जिसमें आज बेटियों ने बाजी नहीं मारी है? इन्दिरा गाँधी, किरण बेदी, पी.टी. ऊषा से लेकर मेरीकॉम, ममता बैनर्जी, सुषमा स्वराज, पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल, विकलांग होते हुए भी एवरेस्ट पर तिरंगा फहराने वाली अरुणिमा सिन्हा, दोनों हाथ न होते हुए भी पंजाब ज्यूडीशियल सर्विसेज में तीसरी रैंक हासिल करने वाली कुलबिंदर कौर – एक लम्बी भारतीय फेहरिस्त है। पाकिस्तान की मलाला को ही ले लें जिसने आतंकवादियों को चुनौती दी, जिस कारण उन्हें शान्ति का नोबल पुरस्कार मिला। कोई कह सकता है, सब तो ऐसी नहीं बन पायेंगी लेकिन क्या हम उन्हें ऐसा बनाने का प्रयास करते हैं? मेरीकॉम जब स्टेट बॉक्सिंग चैम्पियनशिप जीती और अखबार में फोटो छपा तो पिताजी से डांट खानी पड़ी। किसी ने ठीक ही कहा है, ''बेटा तब तक आपका है जब तक उसे बहू नहीं मिल जाती लेकिन बेटी तब तक आपकी है जब तक आपकी अर्थी नहीं सज जाती।''

क्या दुनिया चलने योग्य रह गई है ?

स्वतन्त्रता प्राप्ति को 68 वर्ष होने के बाद भी लगता है कि बेटियाँ अपने जीने के अधिकारों के लिए तड़प रही हैं। एक दशक में एक करोड़ सैंतीस लाख बालिका भ्रूण नष्ट किये गये। ये तो केवल सरकारी आँकड़े हैं,

जमीनी स्थिति क्या होगी, यह दिखाई दे रहा है। कहीं न कहीं महिलाएँ भी इसके लिए जिम्मेदार हैं। गर्भ में नष्ट न हो सकीं तो बाहर अनेक उपाय किये जाते हैं इन्हें नष्ट करने के लिए। मान्यता प्राप्त और गैर मान्यता प्राप्त हॉस्पिटल नवागंतुकों के नाश को आज भी अंजाम दे रहे हैं। यह अनैतिक कारोबार इस सभ्य समाज में, 1991 की रिपोर्ट के अनुसार एक हजार करोड़ का हो गया है और दूसरे राज्यों से विवाह के लिए और अनैतिक कार्यों के लिए बच्चियों को बहला, फुसलाकर लाने का कारोबार तो अरबों में पहुँच चुका है। यह कितना शर्मनाक है! फिर भी अगर किसी से पवित्र, संयमी जीवन की चर्चा की जाये तो कहते हैं, यह दुनिया कैसे चलेगी। क्या ऐसे में यह दुनिया चलने योग्य रह गयी है?

2.बेटी कैसे सुरक्षित रह पाएगी?

यह बिल्कुल सत्य है कि कलिकाल के इस अन्तिम दौर में मानव, दानवों जैसी हरकत पर उतारू है। काम विकार के नाले बह रहे हैं। इण्टरनेट और फिल्मों ने बच्चों को बच्चा रहने नहीं दिया। संयुक्त परिवार बिखर गये और माता-पिता दोनों को ही बच्चों का भविष्य बनाने के लिए कमाने से फुर्सत नहीं। न तो बच्चों के लिए समय है और न ही बच्चों को टी.वी., इण्टरनेट, मोबाइल की उपलब्धता के कारण माता-पिता की जरूरत। पिछले समय जो दुर्दान्त घटनायें महिलाओं के साथ घटीं उनमें कम उम्र के किशोर शामिल पाये गये। मोबाइल में फोटो, वीडियो बनाने की सुविधा, फेसबुक और इण्टरनेट के दूसरे साधनों द्वारा कम उम्र के बच्चों की मानसिक स्थिति का दुरुपयोग हो रहा है। विरले ही हैं जिन्हें उनके आत्मबल, ईश्वरीय शिक्षाओं और ईश्वरीय संग ने बचाया है। समाज के ऐसे कलुषित माहौल में बच्चियों का आध्यात्मिक सशक्तिकरण चाहिए। रात्रि क्लब, डांस, थियेटर, बार में जाने से और ढेर सारे बॉय और गर्ल फ्रेण्ड रखने से ही कोई आधुनिक नहीं हो जाता। स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छन्दता ने माहौल को गलत हवा दी है। अत्याधुनिक साधनों का उपयोग केवल पतन के लिए ही क्यों? सकारात्मक, चरित्रात्मक सामाजिक-आध्यात्मिक उन्नति के लिए क्यों नहीं? आज न तो घर में ही और न ही स्कूल, कॉलेजों में नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा का प्रभाव दिखाई पड़ता है। बच्चियों के व्यक्तित्व को जीवट, साहसी, नैतिक, आध्यात्मिक बनाना तो घर की पाठशाला का ही काम है जो पूरा नहीं हो पा रहा है। आज लोगों ने अध्यात्म का मतलब सिर्फ मंदिर में जाना, तिलक लगा लेना, कलावा बाँध लेना, नमाज अदा कर देना या गुरुद्वारे में मत्था टेक देना समझ लिया है। परन्तु अध्यात्म तो स्वयं का अध्ययन, स्वयं की शक्तियों का जागरण और परमात्मा से जुड़कर, शक्ति पाकर सशक्त बनने का नाम है। नारी तो ज्वाला है, चिंगारी है, शक्ति और दुर्गा, महाकाली है, सीता है, गार्गी है, लक्ष्मीबाई और पद्मिनी है। यदि वह चाहे तो दुराचार तो दूर उसे छूने या निकट आने का साहस भी कोई नहीं कर सकता। कहा गया है, ''कन्या वह जो तीनों कुलों का कल्याण करे।'' परन्तु अब परमपिता परमात्मा शिव और प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई दैवीय सृष्टि स्थापना के निमित्त बनने पर वही कन्या मात्र तीन कुलों की उद्धारक ही नहीं बल्कि 21 पीढ़ियों को श्रेष्ठतम बनाने वाली बन जाती है। वर्तमान परिस्थितियों में बच्चियों को यदि बचाना है तो आधुनिक संसाधनों का उपयोग करते हुए भी आध्यात्मिकता के सच्चे स्वरूप से अवगत कराना होगा।

3. दहेज का दानव आज भी मुँह खोले खड़ा है –

एक पिता को कन्या की शादी रचाने में कितने धक्के खाने पड़ते हैं, किस-किस के आगे झुकाना पड़ता है! अगर एक से अधिक कन्यायें हों तो एक तरह से पिता बर्बाद-सा हो जाता है, शादी रचाते-रचाते.. (शायद यह मुख्य कारण हो सकता है बालिका भ्रूण हत्या का)। फिर वह पिता भ्रष्टाचार के अनेक तरीके अपनाता है दहेज इकट्ठा करने के लिए। पूर्वकाल में तो श्रद्धानुसार दहेज, बिना मांगे गुप्त दिया जाता था परन्तु आज स्थिति विकट हो गई है। दूल्हे बिक रहे हैं, बोलियां लग रही हैं। उच्च पदासीन या धनाढ्य की बोली उतनी ही ऊँची जा रही है। अफसोस! माँगने वाला भी, भिखारी की तरह मांगने में शर्म महसूस नहीं कर रहा। यह

दिखावा दोनों ओर से ही है। बेटी वाला भी दिखाना चाहता है कि हमने कितना दहेज दिया। एक पिता, जो कन्या का विवाह बिना दहेज के करना चाहता है, वही अपने पुत्र के लिए बड़ी-बड़ी मांगें करता देखा जाता है। निम्नतम उदाहरण यह देते हैं कि इसकी पढ़ाई-लिखाई में हमने इतना सारा धन खर्च किया आदि-आदि... यही स्थिति रही तो जल्द ही समय आ जायेगा कि कन्या दर्शन सुलभ न होगा। यह है आज के समाज का आन्तरिक परम सत्य (हालांकि आज भी आटे में नमक की तरह कुछ लोग ठीक हैं)। जवान होती बेटी किस प्रकार से गरीब पिता पर बोझ बन जाती है, यह तो वही जानता है। समाज में मौजूद इंसानी गिद्धों और भेड़ियों से बचाने में उसकी रात की नींद भी उड़ जाती है।

पहले कन्या पूज्य होती है सब उसके चरणों में पड़ते हैं। विवाह के बाद उसे सबके चरणों में पड़ना होता है। विवाह के बाद इच्छा न होने पर भी उसे विकारों की दलदल में जबर्दस्ती गिरना ही होता है। मानव के 21वीं सदी में पहुँचने के बाद भी शास्त्रोक्त देखिये कि नारी नर्क का द्वार है या सर्पिणी है। अगर नारी नर्क का द्वार है तो भैय्या! पुरुष क्या है....नाला? वाह रे द्वापरयुगीन महापुरुषों और उन्हीं की जर्जर परम्पराओं को निभाता आज का समाज! कब तक देते रहेंगे उन्हें दूसरा दर्जा? उन्हें भी प्रथम सोपान पर आने दें। उन्हें भी दें मौका अपनी प्रतिभा दिखाने का!

हमें उन पर गर्व है

पिताश्री ब्रह्मा बाबा के द्वारा परमात्मा शिव ने नई दुनिया की नींव रखी और बहन, बेटियों का आध्यात्मिक सशक्तिकरण करने वाला और पूरी तरह से महिलाओं द्वारा संचालित प्रथम विशाल संगठन तैयार हुआ। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बहनें, शिव शक्तियाँ उदाहरणमूर्त हैं जो पिछले 80 वर्षों से निःस्वार्थ भाव से आत्मिक चेतना जागृत करने की सेवा में संसार के लगभग 140 देशों में तत्पर हैं।

आज आवश्यकता केवल भाषण की नहीं लेकिन उन भाषणों को अपने घर-परिवार और समाज में अमल कराने

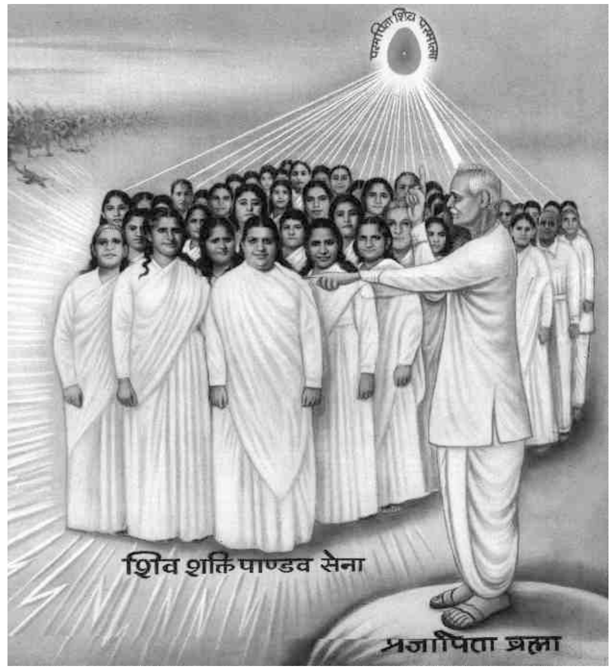

की है। बचाना होगा आज इलैक्ट्रोनिक मीडिया, टेलीविजन, सिनेमा, इण्टरनेट, मोबाइल द्वारा नष्ट होती भारतीय परम्पराओं को जिसमें नारी पेड़ों के आगे-पीछे और पार्टी, बारों में नृत्य करने वाली कठपुतली बना दी गई है और जिसकी डोर आज भी पुरुष के ही हाथ में है। करनी होगी बेटियों की सुरक्षा इन सबसे।

अन्त में हम निवेदन करना चाहेंगे कि स्वमानी और स्वाभिमानी अवश्य बनें, असत्य और अन्याय के खिलाफ बिगुल जरूर बजायें, विकारों रूपी असुरों पर दुर्गा और काली अवश्य बनें परन्तु अपनी सफलता पर ''प्रभुता पाहि किन्हें मद नाहीं'' की तरह अहंकारी बन कर किसी का अपमान न करें क्योंकि इस समाज में कीचकों, दुःशासनों और दुर्योधनों की कमी नहीं है। बेटियाँ और बहनें चकाचौंध में जीवन न बिगाड़ कर, अपने लक्ष्य पर ध्यान दें और दैवी गुणों को धारण कर परिजनों और समाज को नारी उत्थान के लिए जागरूक करें। लोगों के मध्य आत्मिक-आध्यात्मिक उत्थान की चर्चा करें। स्वयं को स्वयं ही प्रतिभावान बना लें तो सोने में सुहागा होगा। ❖

भक्तिमार्ग से ज्ञानमार्ग की ओर

ब्रह्माकुमार भैय्याभाई साकुरे महाराज, भंडारा

मैं कीर्तनकार हूँ। अभी तक चार-पाँच सौ धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करके समाज-जागृति की है। पिछले 45 वर्षों से भक्तिमार्ग का आधार लेकर कीर्तन करता आ रहा हूँ। 'ओम राधेश्याम' मंडली के सत्संग में मुझे मेरे लौकिक गुरु द्वारा गुरु-गद्दी मिली। इस गुरुमार्ग में 2000 के ऊपर अनुयायी कार्यरत हैं। भक्तिमार्ग में आत्मा को ही परमात्मा समझता था। परमात्मा को सर्वव्यापक तथा श्रीकृष्ण को परमात्मा समझकर कीर्तन किया करता था। भागवत और अन्य कार्यक्रमों में देवी-देवताओं तथा संत-महात्माओं के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालता था।

एकदम नया और विपरीत ज्ञान

सन् 2001 में एक स्थानीय ब्रह्माकुमारी पाठशाला में जाने का ड्रामानुसार मुझे स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ मुझे परमात्मा के दिव्य जन्म का, आत्मा-परमात्मा का तथा सृष्टिचक्र का ज्ञान दिया गया। यह मेरे जैसे भक्तिमार्ग के कीर्तनकार के लिये एकदम नया और विपरीत ज्ञान था, समझ से परे था। निमित्त ज्ञान सुनाने वाले भाई ने मुझे छोड़ा नहीं, भंडारा सेवाकेन्द्र की निमित्त संचालिका से मुलाकात करवाई और शिविर के लिये मधुबन (आबू पर्वत) जाने का प्रबंध किया। सन् 2001 में 16 लोगों की टोली के साथ हम मधुबन गये, नई दुनिया रचने वाले निराकार शिवबाबा की ही यह योजना थी। बाबा ने अपने कार्य के लिये मुझमें कोई विशेषता देखी होगी इसलिए मुझे बुलाया, ऐसा मेरा मत है।

महसूस हुआ जमीन-आसमान का फर्क

अभी तक भारत के सभी मुख्य तीर्थस्थलों पर मेरा जाना हुआ था लेकिन जब पहली बार मधुबन गया तो उस स्थान का विशेष आकर्षण हुआ और इतनी खुशी महसूस हुई जिसे शब्दों में बयान नहीं कर सकता। वहाँ की पवित्र आत्माओं का रूहानी आकर्षण, पवित्र वातावरण, शीतल शान्ति और स्वच्छता देखकर स्वर्ग-सा महसूस हुआ। जितने भी धार्मिक स्थानों पर मैं गया वहाँ के धार्मिक वातावरण में और मधुबन के रूहानी वातावरण में जमीन-आसमान का फर्क महसूस किया।

सुख और आनन्द से सराबोर हूँ

वहाँ जो आत्मा और परमात्मा का ज्ञान मिला वह सच्चा महसूस हुआ, भक्ति मार्ग से परिवर्तन की घड़ी प्राप्त हुई, अपार खुशी से आत्मा चार्ज होने लगी। कोई भी संस्कार चाहे भक्तिमार्ग के हों या व्यवहारिक जीवन के, सहज खत्म नहीं होते लेकिन यदि सत्य ज्ञान देने वाली आत्माओं से निरन्तर जुड़े रहें तो पुराने संस्कार मिट जाते हैं, यह मेरा निजी अनुभव है। मधुबन से लौटने के बाद मैं भंडारा सेवाकेन्द्र से जुड़ गया। अब रोजाना सुबह गीता-ज्ञान सुनने जाता हूँ। अब तक मधुबन में 14-15 बार बाबा से मिलने तथा पार्टियाँ लेकर गया हूँ, बाबा का कार्य मुझे बहुत सुख और आनंद से सराबोर कर रहा है। भक्तिमार्ग के मेरे अनुयायी मेरी तरफ आश्चर्य से देखते हुए निंदा, स्तुति तो करेंगे ही लेकिन मुझ आत्मा को बाबा ने अपने जिस कार्य के लिये नियुक्त किया है, उसमें मैं अविनाशी कमाई कर रहा हूँ। इसके लिये विनाशी नाम-मान को तिलांजली देनी भी पड़े तो यह कोई मायने नहीं रखता।

जरूरी है सात दिन की ट्रेनिंग

धरती पर भौतिक ज्ञान इकट्ठा करने के लिए विज्ञान द्वारा कम्प्यूटर आया, उसको समझने के लिए दो-तीन माह की ट्रेनिंग लेनी ही पड़ती है। इसी प्रकार नयी दुनिया के

लिये जो नया रूहानी ज्ञान निराकार शिवबाबा परकाया प्रवेश करके दे रहे हैं उसे प्राप्त करने के लिये सात दिन की ट्रेनिंग लेनी ही पड़ती है। यह मेरा सत्य मत है। इसलिये अपने गाँव में या नजदीक के शहर में पाठशाला या सेवाकेन्द्र पर जाकर अवश्य सात दिन का कोर्स करें, तब आत्मा क्या है, कहाँ की रहने वाली है, परमात्मा कौन हैं, उनके कर्त्तव्य क्या हैं, वे कैसे नई दुनिया रचते हैं, ये रहस्य समझने में मदद मिलेगी। ❖

अब शान्ति चाहने लगा हूँ

ब्रह्माकुमार सुरेन्द्र शर्मा, प्राचार्य (सेवानिवृत्त), नरसिंहपुर (म.प्र.)

मुझे बाबा ने कैसे चुना, यह एक रहस्य है। दिसम्बर, 2011 में अखबार में एक रंगीन पर्चा मिला जो काफी आकर्षक था, मैंने उसे ध्यान से पढ़ा, कार्यक्रम का विवरण देखा और कार्यक्रम स्थल स्थानीय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय चला गया। सुन्दर भवन, जो देवालय से भी आकर्षक था, अपनी ओर खींचने लगा। मुझे लगा मानो कोई भीतर से मुझे बुला रहा है कि अब तुम्हारा स्थान यहाँ पर है। भीतर प्रवेश करने पर यहाँ के शांत वातावरण ने मुझे बहुत आकर्षित किया। अनेक भाई-बहनें कार्यक्रम की तैयारी में जुटे थे। श्वेत वस्त्रधारी बहनें प्रभावशाली और सौम्य व्यक्तित्व का प्रभाव डाल रही थीं। यहाँ की अवर्णनीय छटा देख मैं आश्चर्यचकित रह गया।

राजयोग की शक्ति अपार है

वहाँ काफी परिचित भाई मिले, सभी 'ओम शान्ति' कह रहे थे, मेरे मुँह से भी ओमशान्ति निकल पड़ा। इसके बाद मैं प्रतिदिन आश्रम जाने लगा और ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने लगा। साथ ही राजयोग का अभ्यास भी प्रारंभ कर दिया। तीन बार मधुबन जा चुका हूँ। मधुबन तो स्वर्ग है। विचित्र है। बाबा साक्षात् वहाँ बैठे हैं, कहते हैं, 'आओ मेरे लाडले बच्चे बापदादा बाँहें फैलाए तुम्हें बुला रहे हैं।' राजयोग की शक्ति अपार है। हम पुरातन काल से योग की महिमा सुनते आ रहे हैं। श्रीमद्भगवद् गीता में राजयोग की बहुत महिमा की गई है। राजयोग हमारे समस्त विकारों को दूर करता है। गृहस्थ जीवन में रहते हुए अल्पकाल में मेरे जीवन में जो परिवर्तन एवं उपलब्धियाँ हुई हैं, सब बाबा की देन हैं। जो अनुभव हुए हैं उनको प्रस्तुत कर रहा हूँ –

स्वभाव बन गया है बड़ी बात को छोटा करना

पहले किसी कार्य को करने के बाद बहुत विचार करता था पर अब किए हुए कार्य पर आत्मसंतोष हो जाता है। निर्णय लेने की तत्परता आने लगी है। 'जी हाँ' कहकर अपने व्यवहार और कार्य में शालीनता का अनुभव करने लगा हूँ। अब शांति चाहने लगा हूँ, शान्ति स्थापित करना, विवाद शांत करना और बड़ी बात को छोटे रूप से शांत कर देना मेरा स्वभाव बन गया है। सभी को आत्मसंतोष देना अपना फर्ज समझने लगा हूँ। क्रोध पर काफी हद तक नियंत्रण कर लिया है। उस पर तत्काल ब्रेक लगा देता हूँ। मृदु भाषा का प्रयोग कर, सीमित शब्दों में सभी को संतुष्ट और प्रसन्न रखने का प्रयास करता हूँ। धैर्य धारण करना और कराना, सामने वाले का मनोबल बढ़ाना, समयानुसार तथा वातावरण अनुसार कार्य करना, इस पर ध्यान देता हूँ। बाबा ने कहा है, एक सेकण्ड में अशरीरी हो जाओ, यह भी धीरे-धीरे होने लगा है, लगातार संभव नहीं हो पाता है, लौकिक वातवरण में मन चला जाता है, प्रयास जारी है। शिवबाबा पर दृढ़ विश्वास है, वही करनकरावनहार है। ❖

मैं अवसाद मुक्त हो गई

ब्रह्माकुमारी शोभना दुबे, नागपुर (जरीपटका)

मेरा अलौकिक जन्म हुआ 13 मार्च, 2014 को। इस स्वर्णिम दिवस को मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ी थी। मेरा अतीत अत्यन्त मानसिक कष्टों से होकर गुजर चुका है। मैं विगत 22 वर्षों से एक अंधकारमय जीवन जी रही थी। मैं विज्ञान की विद्यार्थी थी, पढ़ाई में होनहार थी, सभी प्रतिस्पर्धाओं में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेती थी, महत्वाकांक्षी थी किंतु किसी भी क्षेत्र में सफलता न मिलने के कारण बी.एस.सी. करते-करते पता ही नहीं चला कि कब अवसाद का शिकार हो गयी। इस बात से अनजान माता-पिता ने मेरा विवाह कर दिया। विवाह के डेढ़ वर्ष बाद मैं एक बेटे की माँ बनी। अन्दर ही अन्दर अवसाद रूपी दीमक मुझे खोखला करती जा रही थी। पति के साथ मेरे झगड़े होने लगे, जो दिन प्रतिदिन बढ़ते ही गए। इसी वातावरण में मेरा बेटा बड़ा हो रहा था। मेरी स्थिति बिगड़ती ही जा रही थी।

रिश्तेदारों ने किया किनारा

जिस बिल्डिंग में मैं रहती थी वहाँ आस-पड़ोस में भी मेरे रिश्ते खराब होते जा रहे थे। अन्ततः मेरी मानसिक स्थिति इतनी खराब हो गई कि मैंने मन-बुद्धि पर अपना नियंत्रण खो दिया। मेरे लौकिक रिश्तेदारों ने भी मुझसे किनारा कर लिया। इसी अकेलेपन में एक सहेली ने सन् 2006 में मुझे कुछ लिखने के लिए कहा और मैं लेखिका बन गई। मेरे लेख न्यूज़ पेपर (नवभारत) में छपने लगे और रेडियो (आकाशवाणी) में प्रसारित होने लगे। जिंदगी आगे बढ़ती जा रही थी कि अचानक सन् 2009 में पति से रिश्ते बहुत ही खराब हो गये और मैं पूरी तरह टूट गई। एक छत के नीचे एक-एक दिन बहुत मुश्किल से कट रहा था। मैं तो अवसादग्रस्त थी किन्तु मेरा बेटा और मेरे पति मेरे कारण बहुत खराब परिस्थिति से गुजर रहे थे। मनोचिकित्सक द्वारा मेरा इलाज भी चल रहा था, दवाइयाँ बढ़ती ही जा रही थीं और बीमारी भी।

बाबा ने पोंछ दिए आँसू

अचानक मुझे ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की जानकारी मिली। मैं रोती-बिलखती ब्रह्माकुमारीज़, जरीपटका सेवाकेन्द्र पर पहुँची। वहाँ निमित्त बहन ने मुझे सात दिन का कोर्स करने के लिए कहा। मैंने कोर्स किया और नियमित मुरली सुनना प्रारंभ किया। मुझे यह पता ही नहीं था कि ड्रामा का यह दृश्य मुझे भगवान के पास ले आया है। मैं जब भी सेवाकेन्द्र पर जाती, असीम शान्ति की अनुभूति होती। सेवाकेन्द्र की तरफ मेरा खिंचाव बढ़ता गया। मैं दो-दो बार सेवाकेन्द्र पर जाने लगी। मैं बाबा की फोटो के आगे दो-दो घंटे अपने दुख बता कर रोती रहती। तीन महीने बीते और मेरा रोना हमेशा के लिए बंद हो गया। बाबा ने मेरे आँसू पोंछ दिए। पाँच महीने के बाद दीदी ने मुझे अमृतवेले योग करने के लिए कहा। मैंने सुबह की मुरली क्लास और अमृतवेले योग करना शुरू किया। मेरी सारी दवाइयाँ बंद हो गईं। ऐसा अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ कि मैं समझ ही नहीं पा रही थी कि मैं इतनी कैसे बदल सकती हूँ। मेरे संस्कार परिवर्तन हो गए। मैं सुबह से लेकर रात तक खिलखिलाती रहती जबकि पहले खुशी जीवन में मैंने कभी भी अनुभव नहीं की थी।

प्रभु से रिश्ता बड़ा प्यारा और अनोखा

मुझे इस रूप में देख मेरे पति और बेटा दोनों ज्ञान में आ गए। अब मैं प्रतिदिन सुबह 6.30 बजे अपने पति के साथ

सेवाकेन्द्र पर जाती हूँ। धीरे-धीरे मेरे घर को स्वर्ग बनते देख मेरे लौकिक माता-पिता, जो नागपुर में रहते हैं तथा बहन, जो रामपुर में रहती है, सभी ज्ञान में आ गए। आज मैं एक स्वस्थ आध्यात्मिक जीवन जी रही हूँ। जिन परिस्थितियों को देख मैं दुखी होती थी, आज उन्हीं की बलिहारी जो मुझे प्रभु से मिला दिया। प्रभु से रिश्ता बड़ा प्यारा व अनोखा है जो शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

आज भगवान से मेरा रिश्ता क्या जुड़ा, मेरा हर रिश्ता प्यारा हो गया है। आज मैं प्रभु-प्रेम से इतनी भरपूर हो गई हूँ कि हर रिश्ते को प्रेम दे पा रही हूँ। भगवान ने शक्तियाँ देकर मुझे इतना सशक्त बना दिया है कि वो आत्माएँ, जो अवसादग्रस्त हैं, उनकी सेवा कर पा रही हूँ। ❖

21 वर्ष लगे, 21 कदम की दूरी तय करने में

डॉ. चांद सिब्बल, बटाला (पंजाब)

मेरे घर से ब्रह्माकुमारी आश्रम 21 कदमों की दूरी पर है लेकिन वहाँ पर पहुँचते-पहुँचते मुझे 21 वर्ष लग गए। मेरा सौभाग्य देखिए, मैं पिछले 21 वर्षों से स्थानीय ब्रह्माकुमारीज की निमित्त बहन का फैमिली डॉक्टर हूँ। वो सिर्फ मुझसे या मधुबन से ही दवाई खाती हैं और किसी पर उनका विश्वास नहीं है। मैं इतने वर्षों से उनका आश्रम देखता रहा पर सिर्फ डॉक्टर की हैसियत से।

बुलावा अदृश्य शक्ति का

मुझे तथा मेरे माता-पिता को कई बार कहा गया कि आप आश्रम आया करो लेकिन सब कुछ सामान्य चलते हुए भी हममें से कोई आश्रम नहीं जा सका। अब पिछले 5 वर्षों से घर में सब कुछ असामान्य चल रहा है। सोमवार 09.02.2015 को अचानक किसी अदृश्य शक्ति ने मुझको, मेरी पत्नी को तथा मेरी 3 वर्ष की बेटी को आश्रम में बुलाया। उसी शक्ति ने आश्रम की छोटी निमित्त बहन से हमारा 7 दिन का राजयोग का कोर्स पूरी श्रद्धा से करवा दिया। फिर हम प्रतिदिन ज्ञान-मुरली सुनने लगे और आज तक पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

सभी प्रश्न हो गए हल

उस अदृश्य शक्ति का नाम है परमपिता परमात्मा शिव बाबा जिन्होंने मुझ आत्मा को झिंझोड़ दिया तथा 21 वर्षों से राधास्वामी नामदान लिए होने पर भी बिना किसी बहस के तन, मन तथा धन से अपने प्रति समर्पित करा दिया। ब्रह्मा बाबा को फॉलो करते हुए, पुराना सब भूलकर बाबा की दी हुई शिक्षा पर पूरे निश्चय के साथ चलने लगा हूँ। शिव बाबा से मिलने से पहले मैं 21 वर्षों से संतुष्ट नहीं था लेकिन बाबा के अचानक मिलाप से मैं आत्मा पूर्ण रूप से संतुष्ट हो गई हूँ। बाबा से मिलने पर सभी प्रश्न खत्म हो गए हैं। फिर भी कोई प्रश्न तंग करता है तो बाबा अगले दिन ही मुरली द्वारा जवाब दे देते हैं। अब तो कुछ दिनों से बाबा की इतनी कृपा हो गई है कि मुरली से भी पहले पीस ऑफ माइंड चैनल पर या अमृतवेले योग करते समय स्वयं शिव बाबा प्रश्नों के उत्तर देने लगे हैं।

घरेलू हालात बिल्कुल विरोधी होते हुए भी मैं हर समय खुश, सक्रिय तथा संतुष्ट रहने लगा हूँ। इतने कम समय में बाबा ने मुझे जीवनमुक्ति का अनुभव कराकर अर्थात् ट्रस्टी बना कर, परम सौभाग्यशाली तथा सभी पहलुओं से धनवान बना दिया है। अब मेरी यह दिली इच्छा है कि मेरे इस अनुभव से और बहनें-भाई भी शिक्षा लें तथा बाबा के विश्व-कल्याणकारी कार्य में मन, वचन, कर्म तथा तन-धन से भी सहयोगी बनें। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका की जितनी प्रशंसा की जाये, उतनी कम है। इसका हर अंक ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी तथा आत्म उन्नति का भंडार होता है। मार्च, 2016 के अंक में 'वृत्ति द्वारा वायुमण्डल का परिवर्तन' लेख प्रेरणादायी है। कहा गया है कि जैसी वृत्ति वैसी कृति, जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। अगर हम शुभ संकल्प करें कि हम आपस में भाई-भाई हैं तो अवश्य ही परिवर्तन होगा। दूसरा लेख 'दैवी संविधान- पूर्व भूमिका' के लिए रमेश भाई जी का तहेदिल से शुक्रिया करते हैं। आप आगे भी लेख लिखते रहें तो हम भाई-बहनों का मार्गदर्शन होगा। हमें यज्ञ की सारी जानकारी मिलेगी। 'चेत प्राणी चेत' लेख के लिए हम लेखक का दिल से आभार प्रकट करते हैं। ऐसे लेख से बहुत आत्मायें जाग जायेंगी। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष लेख में पूरे परिवार का ही मार्गदर्शन किया गया है। हम यही चाहते हैं कि आप बार-बार ऐसे लेख लिखें।

– हरिनारायण भाई प्रजापति,
ग्राम निमेड़ा, जयपुर

ज्ञानामृत पत्रिका का हर लेख शिव पिता से लवलीन स्थिति की गहराई तक ले जाता है। सबसे अधिक इंतजार 'प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के' एवं रमेश भाई जी के लेख 'ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की जरूरत' का रहता है। रमेश भाई जी के लेखों में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आदि से लेकर अब तक के कारोबार को जानकर तृप्ति व खुशी का जो खज़ाना मिलता है, उसको बयान करने के लिए शब्द बहुत छोटे हैं। उनके लेखों का हर शब्द एक गहरी छाप छोड़ता है। इतनी गहरी प्रेरणाओं के लिए रमेश भाई का तहेदिल से धन्यवाद करती हूँ।

– ब्र.कु. संतोष राठौर,
दिल्ली, उत्तम नगर

ज्ञानामृत पत्रिका का हर अंक बार-बार पढ़ता हूँ और हर बार मुझे नई बात सीखने को मिलती है। हर अंक समृद्ध, प्रेरणादायी और संग्रहनीय है। मार्च, 2016 के अंक में राजयोगिनी दादी जानकी के जन्मशताब्दी वर्ष के बारे में जो लिखा गया है, पढ़कर मन प्रफुल्लित हो उठा। संपादकीय लेख 'वृत्ति द्वारा वायुमण्डल का परिवर्तन' बहुत मननीय है। 'दैवी संविधान-पूर्व भूमिका' में कही गई बात सबके लिए उपयोगी है, एक अच्छी शुरूआत है। हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है फिर भी पुरुष कितनी बातों में कमजोर है, पीछे है, अपने पुरुष होने का कितना गलत प्रयोग कर रहा है, ये सब बातें 'सशक्तिकरण किसका – महिला का या पुरुष का या दोनों का' लेख में बखूबी बताया गया है। सभी के लिए यह पठनीय और मननीय लेख है। पत्रिका का संपादन कार्य बहुत अच्छा है। संपादकीय लेख अभ्यासु व्यक्ति के लिए बहुत उपयोगी हैं। पूरी संपादक टीम को हृदय से बधाई देता हूँ।

– परमार नरसिंह एल.,
माणसा (गुजरात)

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

1. नोएडा (से.26) -शिव ध्वजारोहण के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं हरे कृष्णा मिशन, दिल्ली के महामंडलेश्वर स्वामी हरिओम गिरि, ब्र.कु.शील बहन तथा अन्य। **2.देसुरी** - राजस्थान के ऊर्जा मंत्री भ्राता पुष्पेंद्र सिंह राणावत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.गीता बहन तथा शुचीता बहन। **3.भैरहवा (नेपाल)** - नेपाल के अर्थमंत्री भ्राता विष्णु पौडेल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शांति बहन। **4.सोनीपत (विश्व कल्याण सरोवर)** - 'जीवन का आधार...परमात्म प्यार' विषयक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए हरियाणा की महिला एवं बाल विकास मंत्री बहन कविता जैन। मंचासीन हैं राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति भ्राता ईश्वरैया, दादी रुक्मणी, ब्र.कु. पुष्पा बहन तथा ब्र.कु. लक्ष्मण भाई। **5.भरतपुर** - राजस्थान वित्त आयोग की अध्यक्षा डॉ. ज्योति किरण बहन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. चक्रधारी बहन। साथ में हैं ब्र.कु. कविता बहन, ब्र.कु. कमलेश बहन, महाराजा सूरजमल ब्रज विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.डी. स्वामी तथा मेयर भ्राता शिवसिंह भोंट। **6.मेरठ (खेड़ा गांव)** - केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री भ्राता संजीव कुमार बालयान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. ऊषा बहन। साथ में हैं विधायक भ्राता ठाकुर संगीत सोम। **7.पणजी (गोवा)** - ब्र.कु. शोभा बहन को सम्मानित करते हुए गोवा के पर्यटन मंत्री भ्राता दिलीप पारुलेकर। **8. कुश्मा (नेपाल)** - नेपाल के गरीबी निवारण मंत्री भ्राता चित्र बहादुर के.सी. को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.राधिका बहन। **9.घाटमपुर (उ.प्र.)** - शिव ध्वजारोहण करते हुए केन्द्रीय खाद्य एवं प्रसंस्करण उद्योग राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति, ब्र.कु. अनुराधा बहन, ब्र.कु. कपूर भाई तथा ब्र.कु. सृष्टि बहन। **10.नैरोबी (केन्या)** - नैरोबी में नियुक्त भारतीय उच्चायुक्त बहन सुचित्रा दुरई को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.वेदान्ती बहन।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : May, 2016.

महेसाना-
सेवाकेन्द्र के नवनिर्मित भवन 'गॉडली पैलेस' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी, नगरपालिका अध्यक्षा बहन निमिशा पटेल, ब्र.कु. सरला दीदी, ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. करुणा भाई, ब्र.कु. चन्द्रिका बहन तथा अन्य।

बुटवल (नेपाल) -
नेपाल की राष्ट्रपति महामहिम बहन विद्यादेवी भण्डारी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. कमला बहन।

करनाल -
नवनिर्मित भवन 'प्रभु प्रेम सरोवर' एवं 'ओमशान्ति भवन' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहर लाल खट्टर, ब्र.कु. अमीरचंद भाई, ब्र.कु. भूपाल भाई, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्तिभ्राता ईश्वरैय्या जी, विधायक भ्राता हरविन्द्र कल्याण, विधायक भ्राता भगवान दास कबीरपंथी, मुख्य संसदीय सचिव भ्राता बख्शीश सिंह तथा अन्य।

रायपुर-
'संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, ब्र.कु. सुदेश बहन, ब्र.कु. कमला बहन तथा अन्य।